



I SSN 2229-547X VI DEHA

'विदेह' १२४ म अंक १३, शरद्वर्षी २०१३ (वर्ष ७ मास ७२ अंक १२४)



ए अंकमे अछि:-

१. संपादकीय संदेश

२. गद्य



२.१. जगदीश प्रसाद साहू-उपन्यास- रैछरी रैछि (आगँ.)



२.२. जगदीश प्रसाद साहू छोक दूरी वधूकथा- रैछरी रैछि लेख

३. गद्य



३.१. बसन्तवास साहू छोक दूरी कविता २



लेख नाबाली साहू छोक कविता



३.२. आशीष अन्तिहास-गजल २



डा. निर कृषा प्रसाद छोक गीत



३.३. जगदीश साहू 'गद्य' गजल १-४ २.



भरती गीत १-२/ कविता १-२/ गजल १-१

गजल टोपरी 'नरेश' भक्ति गजल/



३.४.१. कालिणी कासायनी- आधुनिक पूर्ण कवने २.



बिनीता सा- टैन ३.



जाति सा टोधी- निया खन्दी सँ आठ ल (बैलेन्टाण डे पव बिनेय)



३.७.१. बाबुदेव माछवक दू लाई करिता २.



खगदीने लमाद माछवक दू ठी गीत



३.७. रौन अरुण पाठक- गजल १-२



३.७.१. बिन्दुशेखर ठाकुर "लपानी"- प्रेम / गजल २.



सुमित मिश्र- गजल १-२



मिथिला कवा-संगीत १.

जाति सा टोधी २.



बाबुनाथ मिश्र (द्विपथ मिथिला) ३.



उमेश फडव (मिथिलाक रसगति/ मिथिलाक खीर-खर/ मिथिलाक जिनगी)



बिनाश प्रत-१.
करिता १-३

गंज टोधी "नरनारी"- रौन गजल १-३ २.



अमित मिश्र- रौन



बिदेह मैथिली पोथी डाउनलोड साइट



VI DEHA MAI THI LI BOOKS FREE DOWNLOAD SITE

रिदेह ङ-पत्रिकाक सभ्ठा प्रवान अंक (ब्रैल, तिवहुता आ देरनागरी मे) पी.डी.एफ. डाउनलोडक लेन नीचाँक लिंकपव उपलब्ध अछि। All the old issues of Videha e journal (in Braille, Tirhuta and Devanagari versions) are available for pdf download at the following link.

रिदेह ङ-पत्रिकाक सभ्ठा प्रवान अंक ब्रैल, तिवहुता आ देरनागरी रूपमे Vi deha e journal 's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

रिदेह ङ-पत्रिकाक पहिल ३० अंक

रिदेह ङ-पत्रिकाक ३०म सँ आगाँक अंक



रिदेह आब.एस.एस.होड एनीमेष्टबलेँ अपन साँघे/ रँगपव लगाउं।



रँग "लेखाउठ" पव "एड गाडजेट" मे "होड" सेलेकठ कए "होड यू.आर.एन." मे <http://www.videha.co.in/index.xml> ठाँग लेवासँ सेहो रिदेह होड प्राप्त कए सकैत छी। गुगल वीडवमे पठरा लेन <http://reader.google.com/> पव जा कए Add a Subscription रैलन लिंक कक आ खाली स्थानमे <http://www.videha.co.in/index.xml> पोस्ट कक आ Add रैलन दराँउं।



Join official Videha facebook group.



Join Vi deha googl egroups



रिदेह वेडियो:मैथिली कथा-कविता आदिक पहिल पोडकास्ट साँघे

<http://videha123radio.wordpress.com/>



मैथिली देरनागरी रा मिथिलाक्षरमे नहि देखि/ मिथि पारि बहन छी, (cannot see/write Maithili in Devanagari / Mithilakshara follow links below or contact at ggajendra@videha.com) तँ एहि हेतु नीटाँक लिंक सभ पब जाऊँ । संगहि बिदेहक सुँत मैथिली भाषाका/ बटना लेखक नर-पुवान अंक पढ़ू ।
<http://devanagari.net/>

<http://kaulonline.com/uninagari/> (एतए रीँअमे ऑनलाइन देरनागरी ठाँग कक, रीँअस कापी कक आ रई डाक्यूमेन्टमे पोस्ट कए रई हाँगनकेँ मेर कक । विशेष जानकारीक लेन ggajendra@videha.com पब सम्पर्क कक ।)(Use Firefox 4.0 (from WWW.MOZILLA.COM)/ Opera/ Safari/ Internet Explorer 8.0/ Flock 2.0/ Google Chrome for best view of 'Videha' Maithili e-journal at <http://www.videha.co.in/>.)

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Book/ paintings/ photo files. बिदेहक पुवान अंक आ ऑडियो/ रीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ हठाँठे सभक हाँगन सभ (डिजाइन, रई सुथ साव आ दुरक्षित मँत्र सहित) डाउनलोड करौक हेतु नीटाँक लिंक पब जाऊँ ।

VIDEHA ARCHIVE बिदेह आर्काइव



जातिबिग्न पुरि महाकरि विद्यापति । भावत आ लपानक माँष्टिमे पसबन मिथिलाक धवती प्राप्ति कानहिँ महाण प्रकय ओ महिना लोकनिक कर्मभूमि बहन अछि । मिथिलाक महाण प्रकय ओ महिना लोकनिक चित्र मिथिला बने मे देखू ।



लौबी-नीकबक पानरणि कानक मुर्ति, एहिमे मिथिलाक्षरमे (१२०० वर्ष पुरक) अतिशेख अंकित अछि । मिथिलाक भावत आ लपानक माँष्टिमे पसबन एहि तबहक अज्ञात प्राप्ति आ नर सुगल, चित्र, अतिशेख आ मुर्तिकलाक हेतु देखू मिथिलाक खोज



मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित सूचना, सम्पर्क, अद्ययण संगति बिदेहक सर्ट-गजल आ न्यूज सर्भिस आ मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित रेसमागष्ट सभक समग्र संकलनक लेन देखु **बिदेह सूचना सर्क**
अद्ययण

बिदेह ज्ञानरतुक डिस्कमन होक्काव जाड ।

"मैथिल आब मिथिला" (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय ज्ञानरतु) पब जाड ।

१. संगोदकीय

[ला एन्ट्री: मा प्रमिने २००+] डा. मे डुगल आ सहि अकादेमी प्रबन्धन लेन एकव चरण २०१०, २०११ री २०१२ मे ले भ२ सकले । आर डा पोथी मैथिली सहि लेन सहि अकादेमी प्रबन्धन लेन उगल्ले ले बहत । ए तबहक आला उदाहरण बहन अछि । ला एन्ट्री: मा प्रमिने क मैथिली सहि आ बिदेह सहि मया स्थान नीटाँक आलेखमे निकषित कएल जा बहन अछि । डा मैथिली आगाँ सेहो जवरी बहत ।]

भाग-२ (आगाँ)

टाविष्ठा उतव आधुनिक नाटक: सङ्गठन लेकेटक होच नाटक "लेष्टिंग हल्ल गोडो", हेरोल्ड पिन्डव अथेजो नाटक "द रैथडे गेष्ट", रौदन सबकावक रौशा नाटक "एरम् गङ्गजोत" आ उदय नावागना सिंह गटिकेताक मैथिली नाटक "ला एन्ट्री: मा प्रमिने"

उतव आधुनिक आरथथान निवर्धक (एरम्ड) नाटक एन एर्रेन्डस्ट गोडो क सङ्गठन लेकेटक द्वारा स्रग होचसँ अथेजोमे अग्रवाद कएल गेल "लेष्टिंग हल्ल गोडो" शीर्षकसँ आ उगशीर्षक "अ ट्रेजिकामेडी गल ठु एकहस" सेहो जोडल गेल जे होच संकषणमे ले डल । ट्रेजिकामेडी माल ट्रेजेडी आ कामेडीक मिश्रण । एकव कथानकसँ स्पष्ट भ२ गेल हएत जे एकव द्रुथा पात्र "गोडो" ए नाटकमे ठेहे ले, दोसव ओ आरक दृष्टिसँ सेहो नाटकक द्रुथा तह ले ठे । नाटकक द्रुथा तह ठे "लेष्टिंग" माल राष्ट तकनाग । बाया, सृष्ट, रौजुर, टुप्प बहर, टनरौक तबीका, डा सभ ए नाटकक अतिम अंग छि । देशे-कानमे भालेरौना रौजुरावा जोरनशेनीक लोक सभ अछि एकव द्रुथा पात्र । रिष रौजुर शीवीरिक् भारसँ अतिमय करैरौना "मागम कनाकाव" जेकाँ ए नाटकक पात्र अतिमय करै छथि । नाटकमे राष्ट आ सतुननक नर परिभाषा डा नाटक गठेत अछि । आधुनिक थियेटरकेँ डा नाटक नर हगमे प्ररेशे कवारैत अछि । ब्रिठेनक "गुजिक हल्ल" थियेटर मे संगीत हान्य बहे डले जगमे जोरनक निवर्ध "फ्रान्स-ठक"सँ लेकेटक आ राजलेतिक-सामाजिक आतक हेरोल्ड पिन्डव हान्य कणमे देखरैत छथि । "ला एन्ट्री: मा प्रमिने" सेहो स्रक (रौ नवक) क द्वारापव आवसु होगए जतए ओना तँ सभ मृत लोक पंढिरिछ छथि द्रुदा एकठो जोरित रात्रि सेहो छथि । उटका रौजुरी नग सभ-सभ बहे । प्रेमी-प्रेमिकाक ओत रिगहो भ२ जाग छे । लताजी मूहक रौदो रिनयर्सँ एरी लेन अतिमेषु छथि । रामपथी ओतो रौहवसँ समर्थन दे छथि । री.आग.गी. कु सँ ओतो त्रा ले भेटै छे । द्रुदा जग दवरैज्जाक रौहव लोक पंढिरिछ छथि से एक हगमे थुजितो डल आ रौह सेहो होगत डल, डा बहसाछाष्टन टिगथु करै छथि । माल आर डा ले थुजत तथन गनुजवरी कथीक ? नन्दी-हुंगी कहे जे मोसाँक दवरैज्जा स्रग



ले, मात्र रूमरौक दोय डून। अतिशयता रिरक क्माव अपन “सबलस” प्ठुन गेनापव कहे छथि जे कतेक योषिकर्म तँ जाति हकव पाछाँ छोडनक अछि से उर्फ तँ छोडिये देन जाय। रामायणीक कथामे ले स्वप्न-नर्क लोग छै आ नहिये यमबाज-द्विगुण, द्वाद एतुका परिवर्तित देखि क२ ओ अरिग्रीस कोणा कबथ? द्वाद यमबाजे हकका कहे छथि जे ओ दुःस्वप्न हथै। यमदुत सब कइ ह नग अलसे ठाठ छथि कियो भुजैले भेटैते ले छहि, द्विगुणक मेकप रँगा दात्री देखि तिथगणीक हँसनापव तुंगी कहे छथि जे तिथगणी सेहो हकके सब जेकाँ कनाकाव छथि। योणक दवरँज्जा योण छोडि एनापव कोणा खुजत?

ह्रैष्ट नाटक “रैष्टिग हँव गोडो”, हेरोलड पिष्टवक अंग्रेजी नाटक “द रैथडे पार्टी”, रौदन सबकावक रँग्या नाटक “एरम् गद्दजीत” आ उदय नावाया मिह ‘नटिकेताक मैथिली नाटक “ला एन्ट्री: मा प्ररिने” पुराण नाटक जेकाँ परिवर्तित आवस्य आ अस्तुक परिवर्तित अनग अछि। ओ कते सँ शुक भ२ जागत अछि, कते खतम भ२ जागत अछि। एरम् गद्दजीत मे लेखक पात्र तकि बहन अछि, आ अगदोक्क ओ दर्शक दीर्घाकेँ सन्नाहित करैत टाकिटा देवीसँ आएन दर्शककेँ मटपव रँजा छै आ ओकरा नाटकक पात्र रँगा दै। टाकिम पात्र ओकरा प्रिय छै, ओ निर्मल ले “गद्दजीत” छी। ओ अनग अछि, गद्दकेँ जूतेरँगा एतिहासिक पात्र अछि। ओ अगल रिमन, कमल जेकाँ तीथपव ले टनत। द्वाद अस्तु जागत जागत गद्दजीत सेहो अगल रिमन, कमल एरम् गद्दजीत भ२ जागै।

हेरोलड पिष्टवक “द रैथडे पार्टी”क प्रावस्यमे तेहेन समीक्षा भेल जे हकव लेखकीय ज़ीरन समानु हथै पव आरि गेल। द्वाद एकव पुरणार्ति एकवा न्नामिक रँगा देनक। किछ बहस, किछ आतँककेँ ओ सम्पूर्ण नाटकमे रँगल बहनाह, हाथ कथारै आब मजगुत केनक। स्टेशनले की अछि, डून रौ रँग२ टैत अछि? की ओ स्त्रीकेँ दुषित करै, रौ ओ अपन पनीक हथ केनक? द्वाद मेग तँ ओकरा पमिल करै छै? ओकर पहिने आ दोसव कअर्थ, के तकव रौधक रँगले? की ओ मृठ रँजेए रौ रतिमान सामाजिक आ बाजलैतिक परिवर्तयसँ अनग रारहावक अछि? ओ मेगकेँ योकर टैए द्वाद तैयो कि ए मेग ओकरा पमिल करै छै आ सामाजिक आ बाजलैतिक शक्ति ओकरा कि ए आ कोणा उठा क२ न२ गेल जाग छै, जकव सिगाली गोडेरँज्जा (गोडेरँज्जाक अस्तुक रंग बहसयय रारहाव) स्वर्ग आदर्म उगहित ले क२ पावै छथि।

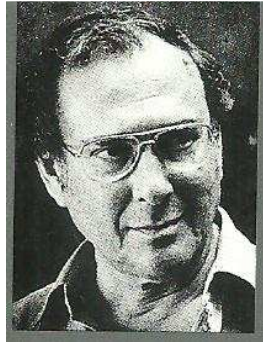
स्वप्न-समान सडकक कातक माष्टिक टिमका आ पत्रहीन नग गाठ “रैष्टिग हँव गोडो” क सृज छि, ताना नागन दवरँज्जाक रौहवक सुन/ मसप “ला एन्ट्री: मा प्ररिने”क सृज छि तँ “एरम् गद्दजीत”मे दर्शक दीर्घा, सए सृज रँगि जागै। “द रैथडे पार्टी”मे घबक कोठनी सृज छि द्वाद पिष्टव एकव पात्र स्टेशनले केँ डेवीडाक “रिखलन” पछतिम कथला खल क२ दैत छथि तँ कथला ह्फर्म जोडि दै छथि। लोक रौ दर्शक ओकरासँ अर्या कब२ नलै, खल सहाय्युति कब२ नलैए खल घृणा कब२ नलै, द्वाद स्टेशनली गोडेरँज्जा आ योक्लाक मोमाँ जखन निर्मल रूमि पड़ैए तँ दर्शक ओकरा रंग अगलारै देथै, जेना ओ “एरम् गद्दजीत” मे गद्दजीत रंग अगलारै देथै। “रैष्टिग हँव गोडो” मे जखन लोक पुराण रंग अगलारै देथै तखल सहाय्युति देखेनापव टमेष्टी पडनापव ओ हतथत बहि जागै। “ला एन्ट्री: मा प्ररिने” मे तिथगणी अर्यारिने बन्ना-मेषकारै द्वादमडकी कहै। पाकेठमाव गद्दक ब्रजपव कपेय्याक रौनी नगरै। नन्दी-तुंगी कहै जे सब गोष्टे सए छी द्वाद का गोष्टे पूर्ण सए ले रँजलौ। “एरम् गद्दजीत”मे गद्दजीतक हान सिमीफम सन छै। शापित ग्रीक तिथक सिमीफम, रंगमावक पाथपव टठरौक लेन अतिशेष्ट, आ जखल ओ टेष्टीपव पहुँचै आकि पाथव ह्फव थवकि क२ ओकरा नीटाँ आनि दै छै। मस्यवक काज आ ज़ीरन निवर्थकतापव आधारित अछि। मस्यव अस्मयन लोगले अतिशेष्ट अछि, गद्दजीत जेकाँ? आकि “ला एन्ट्री: मा प्ररिने”क स्वप्न-नवक, यमबाज-द्विगुणक अमायता देखनाह गगलै देखि रँदनत? द्वाद तखल यमबाजे कहे छथि जे देखनाह गग दुःस्वप्न भ२ सकैए? “रैष्टिग हँव गोडो” अस्तुवक अस्तुजावी ले छि, रैकेष्ट स्वर्ग कहे छथि जे



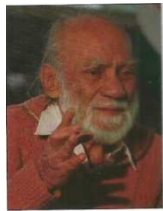
अनुजारी “गौड”क ले “गोडो”क भ२ बहन अछि, उना फिस्टियेनिटी “मिथोजोजी” अछि से ओ तकव प्रयोग कले छथि । अस्तित्वरादी रिटावधावा, मयवथ आ ज्ञानसभ सब निवर्थक अछि, अरिसड अछि ।



“रेष्टिंग हॉव गोडो” दु अकीय ट्रेजी-कामेडी अछि । सद्गुण रैकेट द्वावा १९५२ १. से खेच भावामे निखन गेन आ एकव पहिन प्रदर्शन पेरिसमे १९५३ १. से भेल । एकव अंग्रेजी संस्कारक प्रदर्शन नंदनमे १९५५ १. से भेल आ अंग्रेजी संस्करण १९५६ १. से प्रकाशित भेल ।



होरोडे पिठवक अंग्रेजी नाटक “द रर्थडे पार्टी” कैम्ब्रिजमे १९५८ १. से मंचित भेल आ १९६० १. से प्रकाशित भेल ।



रौदन सबकावक रांगा नाटक “एरम् गद्दजीत” १९६२ १. से निखन गेन आ १९६५ १. से कनकतामे मंचित भेल ।



उद्दय नावायण सिंह 'नटिकेता'क “ला एस्ट्री: मा एरिगे” 2008 अ. मे अ-प्रकाशित आ
होब ओही रीथ प्रकाशित भेल । 19 फरबरी 2011 केँ कर्णालक निर्देशनमे कानिदास बैंगनय, पठनामे अ
छेठ घण्टीक नष्टक मर्ति भेल ।



गजेन्द्र ठाकुर

ggajendra@videha.com

अपन मर्तव्य ggajendra@videha.com पब गछ ।

२. गद्य



२.१ अगदीने असद माछव-उपन्यास- रैछकी रैलि (आगाँ.)



२.२. अगदीने असद माछव लोक दुष्ट वधूकथा- रैवजोवा/ दोसती ले खले



अगदीने असद माछव

उपन्यास- रैछकी रैलि (आगाँ.)

रैछकी रैलि

टावि भाए-रैलिक रीच सुजोछा, पहिने बहल रैछकी रैलिक बाँसँ गाम भयिमे जानल जागत छथि ।
रीघा दु-अठ गक जर्मनरना परिवार ।



ভি়ামী বঁথক অরম্খামে জিগীক ঠনাথক আখিৰী সীঠীমে পহুঁচন স্বজোচনা ভাতিজক সঁগ বিনমগুব-মবয় এদেমেসঁ অগল গাড়াইসঁ গাম পহুঁচনী। গাম পহুঁচতে চনচন ভ২ গোন স্বজোচনা বঁচল এনী। ওলা পড়িলা পীঠীক অগুবকা কবিত অগিলা পীঠী, দীদীক জগহ বঁচিল কহে ভুগ্হি। এক-দুগুয়ে ঠেনক দিয়া-পতা আ জনি-জাতিযো পহুঁচএ নগলী। ডেড়া যাপব গাড়াই বোচি বঘুনাথ (ভোঠ ভাগক জেঠ বঁঠা) উতবি একা-একী সতকৈ উতাব নগল। দু বঁথক পোতাকৈ স্বজোচনা কোবামে লল গাড়াইসঁ উতবলী।

বিঘট-গুঘট শেবাব, চাণীক বঁজা দুলু হাথমে, মলিশ, সাদা মাড়াই পহিবল। খুন-খুন দেহ। উতবিতৈ চাক দিস আঁখি উঠা তকলগ্হি তঁ বুমি পড়লগ্হি জে জেরা কানসঁ বঁগবীত সত কিছু বুমি পড়াই। জিগীক আশা তোড়া ঘবো-দুখাব আ গামোকৈ গোড়া নাগি কহল বচিগি জে অতিম দর্শন কেল জাগ ভী। কহাঁ আশা ভন জে গামক ঝুঁহ ফেব দেখবঁ। তগ বীচ জেঠ ভোজাগব নজবি পড়লগ্হি। নজবিসঁ নজবি মিলিতৈ দুলুকৈ বঁঘজব নাগি গেলগ্হি। ঝুঁহক বোন বঁঘ বহলগ্হি তগ বীচ মূলকঠ চেবো, ঠেগা হাথে বঁসমতিয়া দীদী মেহো পহুঁচনী। জলিলা স্বজোচনা গামক বঁঠী তলিলা বঁসমতিয়া দীদী মেহো। এক উমেবিয়ে দুলু গোঠে, ঝুঁদা স্বজোচনা বঁচল তিগ মাস জেঠ ভুগি। বঁসমতিয়া দীদীকৈ দেখিতৈ স্বজোচনা বঁজলী- “সাজে ভবিয়ে এতে নঠেক গোলৈ ? ”

দুলুক জিগীক বঁচেসঁ একঠাম বীতল বঁজৈমে কোলা কমী বহরৈ ল কব। নিথোক ভ২ বঁসমতিয়া দীদী বঁজলী- “তঁ ল ভাএ-ভাতিজক কমেবনা থা ক২ গোড়া। বঁগি গোলৈ, হমবা কে দেত ? ”

স্বজোচনা- “কিএ ভগরান তোবা খোড়ো বঁগাঠে ভুখু জে লৈ দেমিলাব ভৌ ? ”

বঁসমতিয়া- “হঁ সে তঁ অভিয়ে, ঝুঁদা জএহ কমাএত তেলীমে ল দেত। অচ্ছা, কহ জে ঠুঁঠনাহা নগ কজ্জী ল তঁ বহলৌ। নীক জকাঁ হুটী জুটৈ গোলৌ কিল ? ”

“হঁ। আর তঁ বঁগাঠীলা উঠলৈ ভী, পোতাকৈ কোবো-কাঁথমে ন২ ক২ খেললৈ ভিএ। অগল গাড়াই যো ভী, আর গামেমে বহরৈ। ”

“এ উমেবিয়ে অসকলে বহি হেলৌ ? ”

“ভোঠ ভাএ- ঝলসবো বহত কিল ? কাহি ওহো আওত। তারে কহুনা অলী ঠুঁঠনাহা ঘবমে বহি পজেরাক ঘব বঁগাওত। হম সত কতে জীরে কবরৈ। ঝুঁদা জারৈ আঁখি তকৈ ভী, তারে তকক ওবিসাণ তঁ কবএ পড়ত কিল ? ”

টৌদহ বঁথক অরম্খামে স্বজোচনাক বঁখাহ ভেলগ্হি। জলিলা পিতাক সাধাবণ কিসাণ পবিরাব তেহল পবিরাবমে বঁখাহো ভেলগ্হি। সমাজমে অখন ধবি ধল লৈ ফলে-মুনক মহত অধিক বহন ঝুঁদা মেহো-দেল তঁ চলিতৈ ভন। নীক-মুনক কন্যাক মাঙে বঁসী। ওলা অগল-পিতাক ফল-মুনসঁ দর পবিরাবমে বঁখাহ ভেলগ্হি, ঝুঁদা কোলা লিলে ঠী লৈ, সমাজমে কতেকো গোঠেকৈ ভেল ভুগ্হি আ হোগতো অছি। কোলা প্রম লৈ উঠল।

মিথিলাচনক ওগ গামমে স্বজোচনাক জন্ম ভেল ভলগ্হি জগ গাম হোগত একঠা ধাবো অছি আ পুরসঁ কোসীক পাগি আ পড়িসঁ কমনাক পাগি মেহো বঁসমতক মৌনগমে বঁঠা বঁগি অরিতৈ অছি। ওলা কোসী-কমনাক বঁগ্হ লৈ বহল অরিতৈ-অরিতৈ বঁঠা পতবা জাগত ঝুঁদা বঁবখোক তঁ কোলা নিশিত



ठैकाण बहिये छै । जग मान रँवखा रँसी भेल तग मान रौठा यो नमर-नमर आएन आ जग मान कम रँवखा भेल रौठा यो छोट अछैत । खेतीक लेन रँवखा छोटि दोसब कोला साधन ले छन । नकड़ की कबीरसँ किछु खेती होगत छन दूदा ओ तँ पोथिसँ होगत छन जे रँसीख-जेठमे अगल सुथि जागत । जे पोथि गरीब बँहैत ओग पोथिक पाणि डुगब अछैमे तीन-चारि पाड़ कबीर नगि जागत । गहूमक खेती बहियेक रँवारँव होगत छन, कियो-कियो दु-चारि कष्टी क२ लेत छनह ।

छन गोठैक परिवार चनरँमे सुजोछाक पिता हबिहबकै कठिणाग तँ बहलै कबीर दूदा गाममे मात्र हबिहबे एहेन ले रँहूतो एहेन छनह जे हुनकोसँ तारी जिगगी जीरैत छनह । एक तँ महिना शिक्षाक चनमि ले, दोसब गाममे साधनाक अंतर । ओना रौहबसँ कम सम्पर्क बहल गाममे शिक्षाक ओते जकबतो बहिये छन । रँरनरिक त्रणक जकबत छन जे सतमे छलैक, अखला छैक । सुकनक दूह सुजोछा ले देखनी ।

रिखाक तीन मान पछाति सुजोछाक दूगमन भेल, मासुव गेली । रँथ-पाँटे-डुरैक पछाति मासुबसँ सुजोछाकै भगा देनकन्हि । भगरैक कावण बँहैक जे सन्तान ले भेलन्हि । ओना ल कहियो डाकूवी जाँट कवाओन गेलन्हि आ ल सन्तान ले हेरौक दोष किनकामे छन्हि, से फर्छि भाओन गेल ।

समाजमे एहेन पड़लसँ होगत जे कोला महिनाकै अकप कहि मासुबसँ ठौठिया क२ भगाओन जागत तँ कोलाकै मोलिन तब रँसा भगाओन जागत । गत्यादि-गत्यादि । रँदिक पछति एक-पुन्य एक नारीक सम्बन्धकै पहिने श्रेणीक रिचाव समाज मानल अछि, तगठाम बँग-बँगक रँधा रँगा नारीकै अगुआसँ बोकन गेल । बँग-बँगक संग-अगसंग कहि, तँ उठवी-उठवी रँगा दराओन गेल । एहेन स्थितिकै जँ बोगक जड़ि रँसा तकल आ ओगठामसँ रँदरिक रँठ रँलोल रँसा आग एकैसम शेरबंदीमे पडून छी । अ रिनहन सत्य छैक जे कियो मेव होग आकि मियाव सतकै अगल कानखण्डक लेखा-जोखा होग छै । तँ ओ अगिला-पछिला दोखक भागी भेला, रँमरँ अ ननमति भेल । तँ, जँ कियो अगला हाथे किछु केनन्हि तेकब जँरौदह तँ भेरै कएन ।

सुजोछाक पिता हबिहब समाजक ओल रयक्ति जे आँखि मोनमे कियो गाढक आम तोड़ि लेत रा खेतक धान लाटि लेत तँ एतरे चेतारणी दैत रँजेत छनह जे जाग ि डियो रँगकै कन्ह जे अ छोट । धान लाटनक कि आम तोड़नक । रँमिअन्हि जे जखन तौवा कलैठी पड़तो । समाजमे सहयोगक रिचाव छन । अगल गावजल अगल रँदुराकै सिखलैत छन । दूदा एकठा जँरबदस गुण परिवारमे छनन्हि जे महीनाक चारि-पाँच बरि, चारि-पाँच सोमक सोमरावी मंग कतेको पारमिक उपाससँ सोजा छोट क२ लेल छनह । सबसँतीक आगमन परिवारमे भ२ गेल छनन्हि । सिर्फ अगल हबिहबेछी ले पड़ल । कावणो छन सगल परिवारमे एक समाग गिबहमथियो करैत छनह । तँ शुक्रमे पठ । अ दिन ले नगाओन गेलन्हि । कान-क्रमे ओल-ओल तैयारी पड़अएन । अ दीगब भेल । ओना किछु समाज एहला छन जे एहेन-एहेन अरमथा (सुजोछाक मंग जेहेन भेल तेहेन) कँ रँहुरँसँ बोकनक दूदा समाजक कठिन्याँ तँ रँडका मुस कतिते छै । जाति-जातिकै रँष्टि सत बोगसँ बोगएन छी । कियो कम कियो रँसी । दूदा एहेन-एहेन अगला समाजक दूदा ले रँमि रँमि, जातिय दूदा रँमि कमजोब पड़त गेल । कान-क्रमे जातियोसँ परिवारमे पडून गेल । एक जातिकै नीट देखाएँ रा जातिक तीतब कोला परिवारकै गिदौ मलाबजनक साधन रँमि गेल अछि ।

सबसँतीक आगमनसँ हबिहबक परिवारक रिचावमे किछु नरीनता तँ आरिये गेल अछि । मासुबसँ भगाओन सुजोछाकै परिवार सहर्ष अगला केनन्हि । अगलरैक कावण भेल जे परिवारक सत अगल



गन्ती माणि जेनन्ति जे ओहण कर-मुनये डेगे ले उठैलैक चाली। ओहणसँ झूहो नगाधरौ नीक ले हएत। रौपक दुनकथा रैथी दोसब रिश्ताह क२ जेनन्ति। झूदा सुजोचना अपनार्के रैधरय ले बुझनन्ति। हाथक छुडी बखनि बहनी। समग्र आंगु रैठन। नक्की जल्हा दवरैज्जापव हँसी-खुशीसँ आरि जाग छुनि तखन केतरो ताडी-दाकक खर्चा हवाएले बहे छै। तल्हा ले सबस्रतियो बगडी-मगडी छुनि। सुजोचना जकाँ ले ले छुनि जे मल-मल सकन्पक संग जौलैक रैथै पकडैत, ओ तै तेहेन बगडी छुनि जे एकठौ मोति तलक कोष गण जे हज्जारो मोतिनकेँ मोटिया अपन हिम्मा जेये क२ छोटैत। थकथक कहल भ२ जेते जे जेठकीक जेरुआ जेनि कम देते।

सबस्रतीक कप परिवारमे रैदलन। सँस्रत पछतिक जगह नर-नर पछति थक भेल। सँस्रतोक पछति बहरै कएन। झूदा शिक्षाक बुनियादी पछतिसँ उछानि देनक। सुजोचनाक पीठ पवक जेठ ताए हणसब मैथ्रिक पास तद्दुबिया सुकुनसँ केनन्ति। पवीरी रौकावीसँ त्रुप्त परिवार। लाकवीक तनासमे कनकता जेना। दु सान बहनाह। भायाक दूरी, गेहब-गामक दूरी तै सग्यष्टे बहे। दु सान पढाति हणसब पीठसँ ट्रेनिंग केनन्ति। जोखब प्राणकारीक शिक्षाक रैलनाह।

हणसबसँ छोट झलसब सेहो मैथ्रिक पास तद्दुबिया सुकुनसँ केनन्ति। माँगस पढैत। जलता काउलेजमे माँगसक पढाग ले होगत। गव नगरैत थगडी याक गव नगौनन्ति। ओही ठामक सँस्रत रिद्यालयमे रिद्यार्थीकेँ भोजन-डेवाक रैरस्था सेहो करैत छुनि। कोसी कउलेज सेहो छैहै। माँगसक रिद्यार्थी, नीक जकाँ री.एस.सी केनन्ति तग रीट रिश्ताहो अहसबक परिवारमे भ२ जेनन्ति। चारि भाँगक बैगारी हरिहबक जेनन्ति, तगमे रैठरावा भ२ जेनन्ति। दुनु पवाणी हरिहरो मवि जेनन्ति। दुनु भाँगक परिवार...

(जारी..)

ई बचोपव अपन मतिर ggaj_endra@videha.com पब पठाउ।



जगदीश प्रसाद माछव जौक दुठौ नमुकथा- रैवजोव दोस्ती ले धरै

रैवजोव



बाज-दबराबसँ घुमि क२ अरिते रँडका-डैया हाँग-हाँग रँग बाथि जूता निकानि रँसुमि जकाँ पर्गपव टाकनान टित भ२ ठुवा गेला । एतेक सुनि ले बहनि जे तबरा पमीसँ पमीज पेतारिक मंग देहक घामक बीजन गोनगना कर्ता निकानितथि । आँगनमे रँडकी-डैयि टुलि नग रँस भासम करैत प्रतोहूँ कहैत बहनि-

“कनिसाँ, भगवान जँ ससुर देवनि तँ अहाँकँ देवनि, अगला ए रूठ ाड़ ी तक पहुँचैमे कहियो थाग-पीरै आकि कोला मस-मलावथक दुख रँकन नहियै भेल अछि ।”

मासुक (रँडकी-डैयि) रात सुनि प्रतोहूँ (लेखा) जे तिनकोवक पात छुँटि-छुँटि तहिया-तहिया मासु-ससुर जेन बाथि अगला-ले कोहियामे देन उल्टैरैले जेननि दिस आथि उठैरैत रँजनि-

“कहै तँ छथि रँड सुन्नव रात माथ, दूदा गाममे हिया क२ देखथुन जे हिका एते उमेवक कते गोठे घबक गावजनी अगला हाथे छुँटि क२ पकड़ल छै । थाएन-पीअन पोसन देह डुबहि लाकवनी जकाँ बथल छथि । जे कहाँ कहियो मसमे हाँग डुबहि जे पोता-पोती रिआह-दुवागमन करै जेकर भ२ गेल । अगला उमेव पटस-पटसनक तँ डैये गेल हएत दूदा हाथ-दुष्टी केशा छलै छै मे मोटे-रिटावैक मोका अथेल तक कहाँ देवनि । जहिया दुवागमन क२ ए घब थरने केलौ तहिया अथला डी । पाकन आम जकाँ दुनु रँकती भेली, कथन ठम दे आथि दूनि जेती तेकव कोला ठीक डुबहि । किछु दिस पछाति रँठा-प्रतोहूँ घब संभवत । तथन यएह कहथु जे हिका जकाँ कहिया हएँ ? ”

अगल मनिकियतपव प्रतोहूँक रंग्यराणक आक्रामा देखि रँडकी डैयि तिनकोव उल्टैरैत प्रतोहूँक रौन सुनि तिन-गिनाए नगनीह । ठोठ सँग जकाँ मस मसकए नगनि दूदा रिटाव लोकि मसमे उठैनि, घबराती घब जेती दाग जेती डुद्धे, तगले मरुड-मरुव कवर नीक ले । टासि पएवक हाथी दूनि जागए मसथ तँ मरुजहि दुगये पएवक हाँग छै । आगिक ताँ नग मस तरनि गेल हेतनि, भविसक तँ ए एहेन रात रँजनीह । दूदा नगले रिटाव घुमि गेलनि । एहेन रात प्रतोहूँक रँजक टाहनि । एतरो ले होनि बहनि जे दूहपव एहेन रात रँजनीह । घब-दुआव केतो पड एन जाग छै । एहेन उठित भेल जे पाकन आम जकाँ रूने छथि । जिनगीक कोला ठेकान छै, जँ कही हमसँ पहिल अगल छनि जाथि तँ पोत-प्रतोहूँक गावजनी केहेन हएत । डौड १-मावडि क गावजनी आ पछुआ मागक मोवमे की भेद छै । दूदा किछु रँजनी ले । मजवि दुनुक तिनकोवक तडुआपव, एहेन ल हूअ जे कोला नहकि जए आ कोला अमिनु भ२ नवमे बहि जए । एक हूमादावनी दोसव केनिहनि ।

रँडका-डैयाक असन नाँ सुनोचन आ रँडकी डैयि शोभती छथि । परिवारक रारी समाजक डैयारीमे सुनोचन रँडके डैया आ शोभती रँडकी-डैयिके कपमे बहि गेली । ओना दुनु रँकतीक उमेव असनीसँ उपलैक डुबहि । दूदा उगवका खाड़ ीक नाँमे धियो-प्रतो रँडके-डैया आ रँडकिये डैयि कहै डुबहि ।

सुनोचनाक पर्गक मचमचि अराज आँगन धरि पहुँचि दुनु रँकतीक कासमे ओहिया पहुँचन डुब जहिया मनकाव किमान परिवारमे राधसँ अरैत मान-जानक आराज अरैत । अकानि-अकानि अनुमान नगोननि जे भविसक रूठ १ पहुँचि गेला । अनुमाना ठीके बहनि ।



रैडकी भोजी लेखामँ रैमी पमिगब । देहो हवबक । तँ जारें लेखा भोजनी बाथि पन्था समहारि दुनु हाथ लोपि उठैत-उठैत तारें रूठि (रैडकी भोजी) तीनियेँ डेगमे पति-रैडका-भैया नग पहुँचि गेली । पहुँचि ते आँखि मुनि टाकनान छीत, दुनु हाथ सिक्का दिस रैठौल देखि अर्छि तेत जकाँ हूँए नगनीह । दूदा हाँसे सहावि दहिना हाथक आँखि वक नग भिलौननि । माँस नीके चलैत बहनि दूदा बस्त्राक समारमँ किछु गवम तँ बहरें कबनि । पन्था लोकनमँ भक्क धुँष्ट जेतनि । पाछु उलटैत तकनीह तँ डाँडगव हाथ लल लेखक मोकनी हाथि नहाँति ब्रदुव-ब्रदुव अरैत देखनि । नग अरैमँ पल्लिहि जेसमँ हूँम हकननि-

“कनी पन्था लल आँड ।”

एक तँ बाकनि दोसर नतन, दस डेग आगु रैठरमँ लेखा हूँमेकेँ नीक रूमनि । घुमि तँ गेली दूदा मस रिमागल जकाँ हूँए नगनि । जठ रिय-रिसमी रैठन जाहि तत मसक लोब मेहो तेज होगत जागत भुनि । अ केलेन तेन जे लेनमँ देखेक रैदना पन्था अलेले घुमा देननि । तनहि डाँकठव ले छी दूदा डाँकठवक परिवारक रैठी तँ जीहे । पठन-लिखन जीहे, तखन किछुए रूठि अगटग तेन छथि । एक तँ रूठि । खेनाड जे एत दुवमँ पले एना मे तेननि दूदा रैजितथि मे ले तेननि । लोककेँ कोलो रैमावी होग छै तँ रैजेए आ लिक्क पहल रैकाले रैम भँ गेलनि । तेहल खेनाड रूठि छथि । जना नुष्टि लेतिथि तलिना दुवमेँ हूँम चना देननि । हमरामँ रैमी पमिगब तँ अगल छथिये किछुए ल दोग क पन्था नग गेली । मस ठामकनि । पवरमँ जूर... । मसमे ठहकते लेखक सत रिटाव, पानि पडन मोनीक आगि जकाँ सिमि गेलनि । जँ रात कष्टिथि तँ पीछि त-मँ-रिगवीत भँ जगतथि, जँ ले कष्टिथि तँ रूठि । क जाण-पवाण निकनि बहन छथि । अजोर नीना रूठि छथि । हडपठाहि गाए जकाँ, दुधक कान छुलि उठती आ डोरी तोड़ा आँडा - धुव रुदि कँ छेपे रैव खनीहा भँ जेत । गहए छी परिवार राँदा-दाने, राँदा-दाने, दीने-पीसा, मोसी-मोसा, काका-काकी, भाय-भोजीगक समरूपक कोलो महत ले, दूदा... । कतए रिना गेल राँदा-दानेक समृति थन, जे पेष्ट-काष्टि उपाजित केले बहनि । उठित-अवृति जिषगीक दिना रोध कवरैत अछि तगठाम मँ रनि ठोनक-मानिक मंग हरामे बसेत बह छै ।

पन्थाक आदेशे पुत्रोहकेँ दैत रैडकी-भोजी काण नग दूह सठा कँ पडनथि-

“किछु खेरो-पीरोक मस होग ?”

रैडकी-भोजीक आराज काणमे पेसिते ठोठ माँ जकाँ रैडका-भैया हूँकाव भोजनि-

“की खाएँ की पीर, अनादि कँ पुछे छथि, रैड हएत तँ यए ल हएत जे एते दिस भासि-भासि खाग छलौ आर माँडा-माँडा खाएँ ।” तले-तब जे रैडका-भैया रैजेत बहनि मे रैडकी-भोजी नीक जकाँ ले सुनि पौननि । अनाद-मँ-अनादित होगत हाथीक मुठ जकाँ मजीवाक धरिमे रैडकी-भोजीक गडाड देखि रैडका-भैयाक मस सुगरुगेलनि । रैजनाह-

“कनी थमू । आँखि पन उठरें ल करैए ।”

भक्ति भारमँ रैडकी भोजी धड-हड । गत रैजनी-

“अछा, पानि पानि आँखि पोछि दग छी ।”



कहि रँडकी-बौज्जी जूआनीक जोगिमे पनगमँ कुदि पाणि आषए दोगनीह । टोकटिक अठमे
 प्रतोह-लेखा पंथा लल अरैत बहथि, अकाममे उँड-त रँडकी-बौज्जीक नजबि लेखापव ले पड़नि ।
 एक गोठे असथिबसँ अरैत दोसब फुदैत-फुदैत शिकलैत, मोथे नग भिड-त भ२ गेनि । कोला
 एक-दोसब परिवारक भिड-त ले तँए ल रँडकी-बौज्जी किछ रँजनीह आ ल प्रतोह-लेखा । मल दूनुक
 ठँगन रूठ एक कोमनपव । चनचनौ जकाँ छथि, अखल जे पाणि जेरँ से पाणि जेरँ । रूठिक (रँडकी
 बौज्जी) धडफड १ देखि लेखाक मलमे उँठन, मोन-त-चित बहरँना रूठ । एषा निमगृत जकाँ किअए क२
 बहना अछि । जमिकामे एते दुबसँ अरैक शक्ति छनि दूदा घबक लोककें कहितथि से होशि ले
 बहनि । जकब कोला बाजबोग छनि । (बाजबोग ठल रँगावी होगत जे जर्ज-मुन ले छैतेत
 दूदा पथ-पवहेजसँ जिनगी देल बहेत अछि ।)

बाजबोग मलमे अरैते रिटाव फुद-फुदए नगनि । जलिया छठी बातिक दुध जिनगीक अतिम
 क्षण धरि स्वापन बहेत, जेकब सहर जिनगीमे सभसँ नमहब होगत छै । किछ लोग एहला होग छै
 जे छठछठ जिनगीकें तोड़ि दग छै आ किछ एहला होग छै जे दूसकावीक मुस जकाँ कहि-कहि
 जिनगी नग छै । तबिसक रूठहोकेँ ल सए पकड़ि लेनकनि ।

दूध जकाँ मल दूनिया गेनि । ओषा अखल दूनु गोठेक (साम्-प्रतोह) काषमे रूठ एक पहि
 धरि एनि तखन दूनुक अण-अण उँठमह बनि । रँडकी-बौज्जीक उँठमह बनि जे बाज-दबराबसँ
 घुमलै । नीक जकाँ परिवारक रिदाग भेले हेतनि, देखा चली टागन केहेन चाकेए ।

जारे लेखा कोठवी पँटि रूठ । नग रँस किछ पुँठेक ओरिआन करिते बहथि आकि रँडकी-
 बौज्जी लोठामे पाणि लल पँटनी । मलमे शिका जगनि । शिका अ जे रूठ मँ किछ कहा ल लल
 होथि । दूदा किं सुनन रीत रीजरो उँटित ले । तहुमे एक दिस मालिक (पति) छथि दोसब दिस
 प्रतोह । जँ कही दूनु एक दिनाह भ२ जाथि तखन अण गति की हएत ? गाड़ १ उँठव भेले
 छठनिहवक जाण खोचै रँटे छै । जँ रँडकी कले छै तैयो अरौह रँगागये दग छै । दूदा मलक
 ताप-सताप रँगले बहनि । प्रतोहकें कहनिथि-

“कनियाँ, अहाँ उँठ्ठा फुँटी एँठ दिअब ।”

फुँटीक भाव देना पछाति रँडकी-बौज्जीक मल बमकनि- ओह, नगले दोहवा क२ अठ एरँ नीक ले
 तहुमे तीन गोठेक रीटमे । ले तँ कड़ू तेनसँ तबरी बगड़रँ नीक होगतनि । पाणिसँ चानि पुँथा
 जगतनि आ तेनसँ तबरी बगड़ । जगतनि तँ अलले होशिमे आनि जगतनि । खेब, जे दूसन से
 दूसन । चानिपव पाणिक फुहार पड़ि ते रँडका-बौया आथि खोननि । आथि-पव-आथि पड़ि ते
 रँडकी-बौज्जीक आथिमे नमकावीक लेगल जगनि । जगिते सहरि गेली । अलले रूठ १ छीमे घी-
 ठावीक रीत मल पाड़ छी । लोककें अगला उँमेवक ठेकाण कवक चली । दूनियोँ तँ अजीरें छै,
 दूनियोँक एका प्रतिनेत लोक एहेन ले अछि जे अणल माए-रँलिन जकाँ दूनियोँक माए-रँलिनक छट ले
 करैत अछि दूदा एह अणवाध किअए होग छै । ऐतिकताक महत जँ ले होगते तँ माए-रँलिनक
 अणवाध कहाँ केतो होग छै ।

पतिक थवथागत मल छाती डोना देनकनि । पँजवा उँठि तकनीह तँ प्रतोहकें उँठ्ठा फुँटी
 जौब-जौबसँ समारैत देखनीह । दूदा शिका तेननि, शिका अ जे जकब कोला रीत हेते । रूँछिवाब
 आदमी काजे देखि आदमी लिहै । जँ कही फुँटये पकड़ि घोनछिया लेनकनि तखन अणल तँ रीटमे



बहि जाएँ। प्रकथक ठेकाल कोण। सँठ-परा जकाँ कथन की कबत तेकब कोण ठेकाल। कथला भगत सिंह रँगि जान फुकत तँ कथला रेशियानयमे दिला-देखाव बूँत-बूँत। मल पड़नमि घी-ठारिक मल। दूदा आरँ ओ मलिक सम्य कलँ बहन। गाढपव सँ खनैत लोक जकाँ भोजीक मल सुगममि दूदा थाकन ठेहियाएन पतिक मेराकेँ प्रथम प्रथिय दैत अगल रँगा रिसवि भोजी पति (रँडका भैया) केँ कहनथि-

“लोककेँ सौंसे देह गूड़-घा बहे छै मे रँवदाम क२ समेपव नहेरै-थेरै करैए आ अहाँ दूदा जकाँ आबो पड़ खसोले जाग छी।”

भोजीक रात भैयाकेँ कठमि ले नगममि। प्रकथपाना जगममि। मरितो धरि पनी नग मुँकि जाएँ तँ केहेन प्रकथ हएँ। फूँडफूँड। क२ टिड् जकाँ, उँटि रँम भोजीकेँ कहनथि-

“कनी हवताक रँम थोनि दिख।”

“एल्लिा उँल्लिा-पुल्लिा रूने छि।” मगठैत पतिकेँ भोजी कहि लेखाकेँ आदेशे देनथि-

“पहिले पएवक पेतारा कनियाँ निकालि दिख।”

उला रँडका-भैया वंगा कपेयाक दूदकी देनमि दूदा मलमे उँटि गेममि पनीक रात ‘उँल्लिा-पुल्लिा काज।’ दूदा रँजनाह किछ ल। सब रात मगपन नग रँजरे उँटित ले। जँ ओकवा नाक ले बहिले तँ कि-कि ल करैत। दूदा डाती बाँग-बाँग भेन जागत बहमि। हवताक रँम थोनिते रँडकी-भोजी बाँग-बाँग भेन दूदए देखममि। रँजनी किछ ल। देह खनिआगेत रँडका-भैया रँजना-

“कनी जेठवीला जेतोँ आ नहागयो जेतोँ।”

एक बाकमि दासेव लातन भोजी आदेशे हकनथि-

“कनियाँ, अहाँ टोका सम्हावक हम राथ कप सम्हावल अरै छी।”

दूनु गोठे मल सान्नुओ आ गूठोहूओ अगला-अगला मल खुँनी जे थेरै कानक गप ल बम पारि मिठासपुर्ण होग छै। दूनुकेँ खुँनी देखि रँडका-भैया खुँनी। परिवार खुँनी तँ अगला खुँनी। जँ खुँनी ले तँ रँजना घुमेकान उल्लिा राग रँथकेँ आ माए रँथकेँ कोबामे न२ घुमेत बहे छै।

कोठवी छोटक रिदाव तीनु गोठे करिते बहथि आकि शिरशेकव पँहुँटि गेमथि। किलको नजेरौक प्रम ल। रँडका-भैया रँडके-भैया भेना, भोजी भोजिये भेनथि आ लेखा अंगीतेक रँथियो आ काँलेजक रिथारियो। कोठवी प्ररेमि करिते शिरशेकव पुँडि देनथि-

“भाय, केहेन यात्रा बहन ?”

जल्लिा दूदा उँपव अस्मी मल जावमि नादि जवाउन जागत तल्लिा अस्मी मल पानिये दूमन रँडका-भैया मिवमिवागत कहनथि-



“अशुभे बहन । ”

डैयाक रात सुनि शिरशेकब रँजनाह-

“पहिले ह्रैस भ२ जाड, नहा-था निअ तखन निचेनसँ आगुक गप तेते । तारेँ ह्य रँसै डी । ”

शिरशेकबक मसमे बहनि जे नर-नर बचना अणल तेता, सेहो देख जेरँ आ दवरौबक कागजो-गत देख जेरँ । एक्क रसतुकेँ एक मतवसँ गिरौनापब अलक तबहक दरौर पडै छै । अमथिबसँ गिरौनापब नवयो रसतुकेँ रँटेक संभारना बह छै, जखन कि जेबसँ गिरौनापब कड । रसतुकेँ छूँछै-फूँछैक संभारना भ२ जाग छै । रँडका-डैयाक स्थिति स्रह बहनि । ह्दा दरौरो देरँ उँचि लै रूमि शिरशेकब छुपे बहनाह ह्दा बेथारै कहनि-

“पाण सए नमरँव जर्दी देन पाण खुआ दिअ । एक सपकी तारेँ यावि जेरँ । ”

जते काज रँडका-डैया आ पा घँठामे करै डनाह ततरेँ करैमे घँठेसँ डुपब नागि जेनि । जलिया पएवमे जात राहि रा जहनमे डडा-रेवी..., ह्दा से शिरशेकब लै रूमि सकनाह । कावा तेननि जे बेथा काँजेजमे थोन-ह्दमे नमरँव एक डन आग उँठरौ-रँसरोमे अमोकर्ज भ२ बहन डनहि । मसमे उँठनि अखवाहाक खनीया पहिले डाँड-रँसक क२ नगँठै, तखन क्शेती नडै आ तेकब पडाति छेँछेँ खनीयाकेँ नगँठै । पडाति सरावी कमि परीक्षा नगँ । जिनगीयोक अरस्था अलिया होग छै । रँडका-डैया एमे छुननाह । भोगी-रिनामीक परिवार रँगा जेनि आ आशामे जौरै डुधि जे टाणक गाडी नगौल डी । मोटिते-मोटिते आथि रँस भ२ जेनि । तह्थागत गुआ जेना ।

रँडका-डैयाकेँ पँडिते रँडकी-डौजी पनरँझी लल पँडि जेनि । दुनु जोठे पाण थेननि । शिरशेकब पडनि-

“अशुभ की कहनि ? ”

शिरशेकबक प्रश्न सुनि रँडका-डैया नयाण भ२ जेना हजारा हाथ डुपबसँ खमा-

“मिसियो भवि जेकब आशि लै डन से तेन ह्दा... ? ”

थेतक अकठा-मिसियाकेँ कियो अल माणरँ ल करैत तँ कियो मागो आ लोठियो रँगा थागत अछि । थेती तेनहि लै होड ह्दा ओहो (अकठा-मिसिया) मैदानमे डँठन अछि । जँ कमियो नजवि लै बाथरँ तँ जजातेक डौतीपब चढी धवतीकेँ अलगाडन रँगा दैत अछि । रँड-घाँड लोकल तीर्थ यात्रीकेँ किडु लै रिगडैत छै, देखे-सुलैक नर-नर स्थाण तेठैत छै । माणिओ रा लै माणिओ समैक शक्ति सरँन होग छै ।

रँडका-डैयाक टेहवाक फिया देखि शिरशेकब मोटथि जे टेहवा कहि बहन डनहि जे जना धमसुबक छेँ नगन होनि । जठि-जठिणक रँगेकेँ जलिया क्शेती कुँछ प्छेसँ पाणि निकालि पाणि सग ह्दगत रँगेकेँ मँछकबसे लल गीत गँरैत केकरो एँठस ह्दक भवि दिन ह्योतनी सुलैक वास्ता रँगा तेत तलिया मिसिया क२ शिरशेकब पकडनि । ह्दा मसमे ओहो होहि जे धमसुबक छेँ कमियो



थड़थड़ एन ले। एकाएक एना किअए भेल। जारै अकाममे पाणि पाणि ले ठकवाएत तारै रिजनी केना रैणते आ रिजनी ले रैणत त ठकका केना रैणत। भनहि अहाँ ओकवा मोलाम अमुन्य रूनेत होगई दूदा ल बाधके नअ मल घी हेतनि आ ल बाधा नटती। केकवा रूते हएत जे ओकवा पकड़ा हाथमे आणत। ओकवा पकड़ा ले गोरबधन जकाँ गोरबक ठेवी रैणरैण पड़त, तगपव फूलही थारी बाथए पड़त तथन जरै समए ठेते सद्दुमँ कविया हरा उट्टि अदलि-रदलि रौदन रैनि दोसव रौदनमँ ठकवाएत, ओले ठकवमँ रिजनी रैनि ठकका रैले छै। तथन जा क२ ओले थारीपव ठकका थमत। कतरौ ठकका जेव कबते दूदा गोरब की ओकव शक्तिकेँ शक्ति माणते। वास्ता बोकते। भनहि अग्रिमेघ हाछ किअए ल होड।

जलिा भातीपव रैस कँठ पकड़ा रैणजेव दूहमँ रैजरी लेत, तलिा रैडका-तेया रैजनाह-

“आशिक रिपवीत अणल हाथे केजौ।”

रैडका-तेयाक रात सुनि शिरशेकव रिडि क मोड़मे पड़ा गेल। पृष्ठमथि-

“एना किअए ?”

“तीन गोठे कारोरावी छेलौ। दु गोठे शिकारी छेलौ आ एक गोठे अणाड़ी डनाह। हूका नि दिन-राति रावहे-रावहे छैक होग छै सह्य रूनेत। ओना जलिा आदि भृषिका सरहक परिवारकेँ जँ कोला परिवार कहि देलै तँ अ जगदराजी भेल। गजिन निर्मातक परिवार जँ गजिन निर्मितक शक्ति ले बाथत तँ रैशिक बकड़ा केना हेते।”

“हँ तथन ?”

“प्रस्रार देखिअ। दोसरो प्रस्रार एले। दूदा जेकव कणल ले डन से भेल।”

“से...।”

“प्रस्रार दगते जे दोसव डनाह, जिनकामँ मिसियो आशि ले डन जे ठकका जकाँ रैनि जेत। जलिा अकाममे उड़ते गीव अणल सहयोगी टिनकेँ देखा दैत आ हवड़ी-रिदेशेवक मकड़क मेनामे अवरौ टाडवक टिकसमे, गलहोव देन पाणिमँ रैणन रोष्टी आ तगपव पाँटफोवना देन अणलक दमक संग हाथमे रोष्टी न२ मेला देथेत आ थेरौ करेत बहे आ तथन जलिा हाथक रोष्टी सगष्टी टिन पोथविक मलवक पीपवक गाढ़पव रैस फट्टए नलैए, तलिा भेल। तेना सगष्टनक जे भाती डलो-डितु भ२ गेल। कतरौ अणलकेँ असथिव कवी दूदा ले भ२ सकन। अन्त भेल जे सदेशे तँ समाजमे जेरै कवत। दूदा-सदेशो तँ सलमे डी। केमहव केहेन रिनहाएत से के कहनक।”

“आर ?”

“देखाव होग दूखले रूमत ले हूअ देखिअ। सरसमाति क२ जाण रैटा गेलौ।”



सुनि दुनु गोठे मर्हित भ२ गेला । रुदा दुनुक मसमे दु तबहक रिटाव बाटा नगननि ।
रैडका-तेनाक मसमे उठैत बहनि जे ङा उमेव सन्नासक छी । हमरा कोन ए दुनियाँ-दाबीसँ मतनरै
अछि जे अलले...

शिरशेकबक मसमे उठैत बहनि जे जाधरि मसमे ले पकड़ि चरै तबवि मसमे संग ले चलि सकरै ।
रिक्कामोक प्रफिया छै । ओहीमे गति-मति संगे चले छै । से ले भेल ।

(“रैवजोव” कथा स्र. प्रेम नेकब मिहरे संपर्तित...)



दोस्ती ले खलै

मतिडिह जकाँ भेल दवरैज्जाक खुँसै उगटि अगल कवनीक हन देखरौ करैत बही आ अगिला हन दिस तकरी करैत बही । दूदा मल केतो खहेरै ल कवए, केतो-कतो दुमियो जाए तँ केतो-कतो रूमि पड़ए जे सद्दक कातमे गहर्जि क संग राखगव दुमि खेले डी । गाम दिस ताकी तँ देखि जे गोसाँग भायकेँ सौमे गामसँ दोस्ती मिमहि बहन डुगहि दोसव हमा डी जे न२ द२ क२ एकठा दोस खेलाग-पीलागसँ न२ क२ रव-रविखाती पुवलाग धवि डन, मेहो चलि गेल । ओह ! अलले मगड ! क२ अगल सकनग तोड़यो । एँ ह कछ जे ग केहेन भेल जे जग भोला रैछैक केने कछैए गंगा कात गेल बही आ केने कछैला पछाति डोड़ केँ अमीबरद देल बहि जे गाल मान पछाति रविखाती पुवि रिखाहो क२ देखी, मे तँ छुँछै गेल । भेलरौ संगत आ जेनक जे तोवा दुआवगव थुक ले लेकरी तलिा मोकमे अगला तँ कहिये देखि । नात-हामि तके डी तँ एकठा दामे डन मेहो चलि गेल । अमकरे जलिा प्रकथक यव तलिा ले योगियोक होग छै । ओह, अलले एहेन मोकमे पड़यो, ओ जँ रैजरे कएन तँ पछाति रूमा दैति जे मलक कोला ठेका छै ओलिा दूहसँ निकलि गेल तगले दोस्ती किअ चलि जाएत । भेल तँ एतरे ल बहए जे ओ माष्टिक तबक अकुआ-सुखीकेँ हन कहि एकादशीक रात कहि आ हमा आम-जाहलकेँ अकाम हन कहि एकादशीक रात कहैत बहि । अलले रातक वगड-मगड रैमि मगह क२ द२ आएन । रूकोड़ नलि गेल जे अमकरे गाममे केना बहर ? जग गाममे जाति-जातिक वगड ! जाति-जातिक रीट कुन-मुनक वगड ! कथला छैक-रिख छैकक वगड ! कथला वाम-प्रयंक वगड !, तँ कथला एँ छैन ओग छैनक वगड !, केना एहेन समाजमे अमकरे बहर ।

जलिा राँह छुँछैल रा डुहव छुँछैल राठि क पालि यनेकेँ दूमा दैत आ यवमे रैसन यवरावी यवकेँ बकक रूमि भकक भ२ जागत सए गति भेल । दूदा गविरीला जे धमिकाक देखनी-बस्ता पकडत तँ कते दिस चलि सकत । मममे उठन जे जारे अगल दूथ दोसवकेँ ले कहै तारे एलिा हएत । दूदा कहरी केकरा कवर । डोगी नारमे रैमा डगमगा क२ दुमरैयेरैना रैमी अछि । गजवि उठा तकयो तँ मंगल ग्रह जकाँ गोसाँग-भाय जोड़ि दोसव कियो ले रूमाएन ।

गोसाँग भाय सकनक संगी । गोष्टि-गंगड ! जे पुवला लोक डुधि ओ अगलाकेँ पुवला सीमा रैला जेनमि तलिा नरका तुव नरका सीमा । कावला भेल शिखाक रैदना । दूदा गोसाँग-भाय तँ एक रैतविया डुधि, हुकेसँ पुडरै नीक हएत ।

रिदा भेलौ । गोसाँग-भाय हमरा गिवगिष्टिया कहि डुधि । जखन रैजे डी तखन ठीक-ठीक कहि दैत डुधि, दूदा वंग रैदलेकान सतवंगा कहि गिवगिष्टिया कहि डुधि । संगी-माथीमे अलिा होग छै । राँहगव देखिते गोसाँग-भाय पुडनमि-

“की गिवगिष्टि भाय, सुले डी अछ रैव गलेकुमेल हएत ? ”



कहलियनि-

“आरै ए सतकै छोड़ि देलौ। सत पाँठी ठहलि-बूनि देखि जेनि। एक उमेरोगव एलौ। छोड़ि-
मावड़ि क छलि धड़रै से सकरै।”

छह पीरिते मन असखि भेल। प्रछलियनि-

“भाय, हमवा दोस्ती ले धारै। तेकर की कावा? अहाँकै देखे छी जे सगरो बुधकी नागन अछि
आ हमवा एकठा भेल सेहो छुँछि गेल?”

“किअए?”

“झाँ-छुँछी भेल गेल।”

“की झाँ-छुँछी?”

“लौआ-छुँछी ले खेनाग छि तलि।”

“गिबलि भाय, अहाँ नंगोष्टिया संगी छी तँए कह छी। जलि कोला-कोला गाँवमे एकठा भेल होग
छे, आ कोलामे झुसवास नर क नंगोष्टिया भेल, पतवका संग जल्लो होग छे, सरहक अंग-अंग
काजो आ जल्लियो छे। तलि बिब बोधन मख्खोक भेल छे। ओकबामे दोसर केला मछे छे आ
हछे छे, यएह खेल छे। अही पाणिपव सत लेस जल्लोक नार खेनि भेल-सागव पहुँचै।”

ए बचनपव अपन मख ggaj_endra@videha.com पव गछै।

३. पत्र



३.१.१.

बमबिवास साहूक दुष्टी करिअ २



लेख नावायनी साहू जीक करिअ



३.१.२.

आशीय अलछिह-गजुन २



डा. शिर कयाव असादक दुष्टी गीत



३.३.१. जगदीश्वर सा 'मय' गजल १-४ २. भगवती गीत १-२/ कविता १-२/ गजल १-१



गंज टोपरी 'बरगशी' भक्ति गजल/



३.४.१. कालि कायागनी- आश्रक पूर्ण कवने २. ज्याति सा टोपरी- गिया छन्द सँ आठ ल (रेलवेस्टेशन डे पब विशेष)



रिनीता सा- टैन ३.



३.३.१. बाबुदेव माडवक द लोष्ट कविता २.



जगदीश्वर सा माडवक द छी गीत



३.३.१. रौन अरुणद पाठक- गजल १-२



३.१.१. बिन्दुदेव ठाकुर "लगाती"- श्लोक / गजल २.



सुमित मिश्र- गजल १-२



१. बाबुदेव माडवक द छी कविता २.



लेख बाबासा माडवक छी कविता

१



बाबुदेव माडवक द छी कविता

बाबुदेव माडवक द छी कविता-



झीयरै केशा

झीयरै तँ झीयरै केशा

दूमियाँ रैदनि गोन जेना

टाककात अंधबमे रुकबमे

दिन-दहाले डाका गड़ैए

टोरेष्टियागव गज्जति बूछाए

गाम-शेरबमे दारु रिकाए

मानर पीरै दानर रैलैए

छोबी-डाका सिगाजोड़ १ करैए

रीट रैजाव रैनतूकावी होए

कतए छनि गोन धरक नीति

जेनए देखियौ रुबितिये बीरि त

झीयरै तँ झीयरै केशा

दूमियाँ रैदनि गोन जेना ।

छलेत रैछै डब नछैए

टोब सिगाली खेन करैए

सबकावक कानुन उल्टा रैननए

नि नदोयी जेन जहन रैननए

दोयी घुमि-घुमि योज करैए

सबकाव अपवाधीक रीट



गवीरँ जलता पीसागत बहेए

सभ हत्यावा कर्म रँगलए

सबकाव धृष्टबायष्ट रँगलए

अधिकारी मंत्री मान ब्रूठैए

देशेक जलता रौक रँगलए

देखि करि मोचमे पाड़लए

जियरँ तँ जियरँ केशा

दुनियाँ रँदलि गेल जेना । ।



मोषक आणि

पुर्णमाक टास मनिष तेन
देथि तरेगन कनथी मारए ।
मोनह त्रुंगार काएन
तेन मनिष ।
पिया रिय तेजो निवहिन
वातिक हुन तेरे तेन मनिष ।
मृग हवाये मृग रौआगए
तेठकि-तेठकि जलिआ गवाष गमारैए ।
तलिआ मर हमर भवमैए
मोष आणि बहि-बहि जडैए ।
ले पिया पियास आमागए
मोनहकनसँ सजन टासलै
जलिआ अहवा ले देखैए
तलिआ गवदेशिया पिया
अगनलै निवाष बुनैए ।
निबदैयलै प्रेम रेणा जगटे
प्रेम रिय दुनियाँ रेणा चनटे ।
की टकरा टकरा जकाँ



माँस पड़त रिड्डा पड़ते ?
पूर्वमाक छन देखि बाति रितेते
कहे करि बाखु मोनमे धीबज
एक दिन मेठेत अमृतसँ पियाम
अपन मोनक आगि केँ बाखु दाँ रँ ।

२



हेम नावायण साहू

हम छी मैथिल-

हम छी मैथिल हमर छी मिथिला
मिथिला हमर गाम छी ।
हमर अंगण धाम छी ।
किएक एकवाँ रिसवि बहन छी
एँ माँ-पानी केँ छोड़ि पड़ । एँ बहन छी ।
एँ तू केँ सद्गुण जगमे नाम जपे
समावक लोक जय-जय गान करे ।
मिथिलाक सद्गुण-सम्पत्तिकेँ
किएक रिसवि बहन छी ?



अर्थात् लोक-गाथा

ठोहि पाछा कानि बहन छै ।

कतए गेल जठ-जठौन

उ सझी गीत... ।

गायक गली-फट्टी गरैत डन कहियो

कतए गेल अला-कदन उ लौकिक नाट

जे ठेहिया द२ मटपव ननकारैत डन ?

रिना गेल मरवाग केव थिस्मा

धर्मबाज सन धर्मात्माक भक्त

हरिया जेम सन भक्त कहरैत डन ?

रिग कोला भेद-भारक

भक्त केव घर भोजन करै डन ।

रिसवि गेल सत दिला-भदवीक गाथा

रिसवि गेल सत दुखमनक गाथा

कतेक पिपारी मिथिलाक संस्कृतिक गाथा

मन पछैए तँ दुखगए गाथा ।

ए माहभूमिक सतान भ२

माएकेँ छोछा किअए पछाग छी ।

हम छी मैथिल हमर छी मिथिला



किअए एकवा रिसवि बहन छी ।

ए बचनोपर अणन मतिर ggajendra@videha.com पर पोछ ।



१. आशीय अणटिहाव-गजमर.



२. निर कयाव तमादक दुष्टी पीत

१



आशीय अणटिहाव

गजमर

मोहितमँ छै रैनन लाव हमार
भेलै हँसी तँ अंगोव हमार

हम तँ छी आर सँमक भरोसे
नीनाम भेल छै भोव हमार

हम देखलै किअ दोसबक दिस
तौली तँ डहक टितछेव हमार

कोला स्रुवाव ले देशेमे छै
लोक तँ रँड्ड कमाजोव हमार

रँष्टक हिसार ले गुड मीता
छुँष्ट जोन आर संगोव हमार

दीर्घ-दीर्घ-नघु-दीर्घ+ नघु-दीर्घ-दीर्घ+ नघु-दीर्घ-दीर्घ हलक पाँतिमे



२



छ. निर कयाव प्रसादक दुष्टी गीत-

समर्पक-सहायक प्राध्यापक (मेलेक्मण ग्रेड), हिन्दी विभाग, रु. प्र. सह महारिप्यालय, (फि नर्मली कावेज
फि नर्मली) फि नर्मली - सुपौन ।

रौखा केव उरैछै

कजबोछी केव काजब संगे

रौखा केव उरैछै रिन गेन ।

सोखरी केव अशौचक संगे

भावतीय संस्कार हवा गेन ।

रौखा केव..... ।

नर हागक नर संस्कारमे

जलमन रैरीक पाउंडव छि गेन

मागक स्तन जोड़ि क२ लेना

रौतन संगे माए भुना गेन ।

रौखा केव..... ।

मिलहक डोबि तोड़ि क२ ममाता

सुन्दरता केव मोन रिका गेन

दाग लौकिक संग पाँरि क२



लगा मागक शोक भना गेल

रौखा केब..... ।

अपन आन सभ पागपव रिक गेल

सम्बन्धक सभ आँट रूँता गेल

धन नष्करीक टकाटोषमे

तन मन बागक बैग मेठी गेल

कजरोठी केब काजब संगे

रौखा केब..... ।

मोहव जल्हा रैबैया संगे

मुँडन उगलिनक महत मेठी गेल

नकदक गाडी रसत्राभूषामे

रैकखा केब आचार्य भना गेल

कजरोठी केब काजब संगे

रौखा केब..... ।



शेहब ओ जेव.....

शेहब ओ जेव मयूकथ रैले जेव

गाममे बहि रैन-मायूथ डन

शेहबक पाथव केव जंगनमे

सभकेँ सभ आग पथवा जेव ।

शेहबक पाथव केव जंगनमे

सभकेँ सभ आग पथवा जेव ।

गाममे सभ डन भाए-रैनिस सभ

कियो रारू कियो काका डन

तेया-तेोजी रैपी-भतीजी

ले कियो रिषु नाता डन ।

शेहबमे जागते रिशित-नाता

सभठा मष्टिया-मेष्ट भ२ जेव

शेहबक पाथव केव जंगनमे

सभकेँ सभ आग पथवा जेव ।

पथवाएन शेहबी पाथवमे

कलिको माभरता ले रौचन

टावि रैवथसँ टानीस रैथ केव



लगा-हरती रैनि छटि गेल
शेहबक गाथर केव जंगलमे
सबकेँ सब आग पथरा गेल ।

रौं-रौंही देखतो आनख
समिती कदम रैनि भे गेल
पशुतो एहेन अकर्म सुनि-सुनि
छूट्क पानिमे डुमि मरि गेल
शेहबक गाथर केव जंगलमे
सबकेँ सब आग पथरा गेल ।

ए बचनपर अगल मतिर ggajendra@videha.com पर गछि ।



१. जगदाश्वर सा 'मय' गजल १-४ २.
भरती गीत १-२/ कविता १-२/ गजल १-१



गजल दोधरी 'भरती' भक्ति गजल

१



जगदाश्वर सा 'मय'

ग्राम पोस्ट- हरिधर डीहरेल, मधुबनी

गजल-१

बहरि आरि ले दास रैनि हम
अगल नीक गतिहाम जनि हम

जखन ठानलहुँ हम अगलपर
सकलदा नएलहुँ तँ सनि हम



ऊँठा माथ जतएसँ तकनहूँ
दएनहूँ तँ नखन गमि हम

हनाहन दुनियाँक पील
छले छी अगन मोन तमि हम

जमान खुन मावनक धरवा
नएनहूँ बिजय रिशे ठमि हम

(रैहले अतकारिबै, मात्राक्रम-१२२)

गखव-२

हकन लाव माए कले छै
तकव प्व अथिया रैले छै

कते आरै रैमाण रैछले
गवीरक छेका के गले छै

पतित रैणन लता तँ देशेक
दूनु हाथ ओ मन सले छै

पएनक क्रियो जतय मोका
अगन रैमि क ओहे छेले छै

रैणन लोकना जेठलेअति
अदा मय तँ सभछी जले छै

(रैहले अतकारिबै, मात्राक्रम-१२२)

गखव-३



मल्लखक एहि दुनियाँमे कोनो मोन नहि बहन

हमरा जेन केकरो नग दुष्टा रौन नहि बहन

रैजाएँ कतए ककवा सभठा साज ठुँठगेन

हुन एकठा फुष्टन ओहो आरौ ठोन नहि बहन

सभतरि घुँमेत अछि मल्लखक भेषमे हुँडाव

बुकारौ जेन ओकवा नग कोनो खोन नहि बहन

बातिक भोजन ओविश्राममे माएक मोन अवीव

हुन हमर रौडीमे एकठा से उन नहि बहन

हँसत आ झुकागत बहए जतएकेँ लोकसभ

मिथिलाक गाममे मल्ल आरौ ओ ठैन नहि बहन

(सबन रार्पिक रँहव, रर्पि-१६)

गखन -४



हेथ मोन हवथीत ठोला मोहाग

ले रिष कावले मीठ ठोला मोहाग

थियगव भेष्ट नरकी कनियाँ ठोले जू

हाथक हुनकव लोणगव ठोला मोहाग

जेरौमे जखन भवन कपैया होग

तहल मरुग सन्ताक मोला मोहाग

मियँव तुवकेँ नीक गदगव ममरुग

सुम्वर ओहिगव आरि थोला मोहाग

भवि सन्दुक घर जाहिमे भेटै मोन

एहन घबक मरुकेत मोला मोहाग

(रौहले रुमी, २२२१-२२२२-२२२१)

जगदानन्द मा मन्त्र

ग्राम पोस्ट- हविश्वर डीहठेन, मधुबनी



पंकज टोषरी "नरदशी" भक्ति गद्य/ भगवती गीत १-२/ कविता १-२/

गद्य १-१

१

भक्ति गद्य

द्वैत अर्द्ध परिवर्ण मैं हे

छोठ पव झुकाव मैं हे

हाथ प्लुतक कमल आसन

सज्जन रीणा तन मैं हे

भावती जग मैं भवानी

जग कले गुणगान मैं हे

बुद्धि रीणा रिकलन सन हम

माँगी बहलौ तन मैं हे

फाव आसन जोत भाग्य

दुब हो अतिमान मैं हे

"नरन" माँगत आव ले किड



पारि ङा रवदान माँ हे

*रौहले बगन / मातृका-२१२२

२

भगवती गीत १-२

१

ममतामयी माँ ममता दे तू

ममतामयी माँ ममता दे तू सब कष्ट कलेशे मिठी दे तू

ममतामयी माँ...} २

डोमन लैया रिश थेरैया अगि तौले ठी रौचन मैया

जूमि कब देवी हाथ रैठा दे}२ भरसागव पाव नगा दे तू

ममतामयी माँ...

हम अन्नानी डानक भूखन माँ दानी तौव दानक भूखन

जीरणमे छै घोव अहबिया}२ माँ डानक दीप जड़ । दे तू

ममतामयी माँ...

पकम पारन होयत तन-मन धन्य होयत माँ ङा जीरण

सुतर्क रिशती सुनि ले मैया}२ रैम एक दरस त देखा दे तू

ममतामयी माँ....} २

२

हेयै जगजानी मैया रिशती त सुनियौ



हेयै जगज्जानी यैया किरती त सुनियौ
रौंठा के दमो देखि } २ लेना ल सुनियौ
हेयै जगज्जानी यैया..

त्रिंछा सुगल न एतहुं शेषामे
तन-गल-धन सभ } २ अहिक छवामे
मानरै कथीनँ यैया } २ आव कथी अगियौ...
रौंठाके दमो देखि..

जतय-जतय गोनियौ रैह ठूकलनके
दीन के कियो ल } २ कोव नगोनके
आनि अहि रौंछन } २ पाथव ल रैनियौ..
रौंठाके दमो देखि..

अछुं ले सुनरौं जँ दुःखामा
आन के सुनते } २ कछु ककवा माँ
कहिया हवरँ दुःख } २ आव कते कनियौ...
रौंठाके दमो देखि..

हेयै जगज्जानी यैया किरती त सुनियौ
रौंठाके दमो देखि } २ लेना ल सुनियौ
हेयै जगज्जानी यैया } 3



३

करिअ १-२

१

शेयक शेय ! !

टनी कर्तव्यक पथ पब अरिचन
रैनी शैलिक शेयक सकाव कबी
संतोष बहए संग जितगिनी
लोत-आ-द्वयक प्रतिकार कबी ।

कबी कर्म सतत ले किछ रौधक
अथाप्य प्राप्ति कबी रैनि साधक
रैस शैलसँ सहन कबी ज़ीरन
सत स्रग्न अग्न साकार कबी ।

ले त स्वथसँ रैनी लेह बहए
ले दुःखसँ दूरकन देह बहए
टिता डोडी मित कबी टितन
संघर्ष सहर्ष स्वीकार कबी ।

टनि कान संग रैनी कानरिजगी
संग छुटत पाछु बहि जाएँ
जै शैलसँ देह टोबाएँ त



एहि कानक धावमे रैहि जाएँ
झग भवि ले रार्थे नश्रु होए
झग-झग के एहन जोगाव कबी ।

सभ लेख रिधि केव छलि जाएत
त्रिमसँ भाग्य रैदलि जाएत
थीटि भाग्यक लेखा पुनि
आ त्रिमसँ स्वर्ग त्रैगाव कबी ।

२

हमर देसे पब-गन्ती-सीन ! !

जेमरुव देखु रीने-रीन
हमर देसे पब-गन्ती-सीन !

झुप्राटाव उँजागव तेन त पौखरिसँ रैति मागव तेन
आँठकक से गक पडन सभ छै रैनिक जागव तेन
हुमि रैजे त ठेहूँ-ढाँरी जे सट रौजन रौगव तेन
कतवि बहन छै सभके जेरी खाँकी खादी आव रकीन ।
हमर देसे पब-गन्ती-सीन !

जमता आगाँ डड मोहारी लताजीक डनि भवन रँथारी
सबकालेक भाग जहो छै जँ रैनन योजना कोला सबकारी
पाँट रँवथ धवि कर्मीक माया मतदासक रौव खोजगुडावी



निर्धन नाचावक ले गूढत खँटेत-खँटेत छै छोट्टी छैन ।

हमर देने पब-गती-मीन ।

मिया कँठ नागन की कबटे ठोका छापि कतमँ अणटे
सभछा खेत जँ एखल गेलै रौंकी मिया लेव की गणटे
लावमँ बीजन माएक आँचवि ब्रुका-ब्रुका कते ओ कणटे
मिया रौंगक डीह बिकेलै रौवक रौंगक मोड़ । मीन ।
हमर देने पब-गती-मीन ।

घुमे पब काँटे घुमफुमिया करिया धन सभके चाली
दनमजित छै दन-दनित संवसण सभके चाली
प्रतिभाक प्रतिकाव कबए आवसण सभके चाली
ब्रथा कथा ले कहते ककवा सगब ब्रबन्दा मोहबन पीन ।
हमर देने पब-गती-मीन ।

8

गज्ज-१

सगतवि रँखान मिथिना ले
महिमा महान मिथिनाले

छुधि बाग सज्जन रँमि दूला
छाती उतान मिथिनाले



गाहूँ भवन अछि आँगन

दमन दमन मिथिलाके

धूम गगन शेरैत आ

गवसरी गगन मिथिलाके

अरुण देवि गदगद छति

सब ओरिआन मिथिलाके

अविगन गडन सज्जन डावा

देखै छुआन मिथिलाके

आओत 'नरन' कोऊगवा

रौंर मथान मिथिलाके

रूपी एम: २२९२+९२२२

गज्ज-२

जग भविक उगवागम अकछ भेन डी



बाति-दिन गालीत दगसँ अकछ भेल छी

मोथ झूठ गब झूदा मोन माहूँ भवन

ए हूसियाला अगवागसँ अकछ भेल छी

हम जँ रँजलौं अहाँसँ त कमि बहता ओ

ए सँधक गुणा-भागसँ अकछ भेल छी

दमे सहलौं कते मिसिया भवि मोथ जेन

प्रेमक मधूँ गवागसँ अकछ भेल छी

"बरन" छुँछुँते ले जे निम होएते एहन

बाति-बाति भविक जागसँ अकछ भेल छी

***आख-१३**

गजब-३

सभसँ दुंगर दमे भावत

जगसँ सुख दमे भावत

झूठ परित हिन्द छषहि

छै कमागर दमे भावत

माय माणी माष्टि के सभ



ते हिमगव देशे भावत

धर्म सत्ता जाति सत्ता

रैड दिनगव देशे भावत

अगण अन्नक रैन भरी छै

पेठे अन्नकव देशे भावत

महर ककरो यातना ले

आरै रैनगव देशे भावत

ठाम सत्ता माण सत्ता

नरन नमहव देशे भावत

>रैले कम/मात्रा एम :२५२२+२५२२



गजव-४

"गाँधीजी"क धवती पव रँहलै मोपीत केव धाव कोना

"भगत सिंह" केव आँगनमे जलमल अवाटाव कोना

कतए गेलै "आजाद"क नगरी कमि "नक्का" कत पड़लै

देर आ रिद्वानक नगरीसँ रीना बहन सँकाव कोना

रिसबन-रिगठन छै अगलेती मानरीय-मोनाशा के

जाति-पाति आ तेदतारक पमबन एते रिकार कोना

आर ले जलमे "नाम" किए की देशक माँ छै तेले उमसव

लोती-कपटी-करुमी सबके नागन एते पथाव कोना

ले लत ठीक ले नाम नीक ठीका रँन पव लता रँनलै

करै ओसुनी जलता सतसँ छतवन झुआटाव कोना

मतके माँ रीना रूमल रेंव-रेंव मतदाँन केनहूँ

मतके माँ ले रूमरँ जा जागत पम सबकाव कोना



छोडर ले अधिकार अपन हाड रौहि नी टवु "नरन"
रिग्न मँगल ले भीख भेटै भेटैत हव अधिकार कोणा

>आखव-२९

गखव- ३.

प्रीत रँगि क हियामे बहरै कवरै हम

रँगि लह शोणितमे रँगै कवरै हम

रंग मोडु रँगतक हमर पख जोडु

रँगतक रँग-रँग रँगै कवरै हम

किँ रिसवैमे नागल भी हमरा अलले



डहै रैनि अहाँ संग बहरै कबरै हम

ले रूमनहूँ अही त दोख अनकब कथी

अ तिवयावक तीव महरै कबरै हम

ढे किछ दिन जेन जिनगी तकब मोहे की

लेतीक भरष रैनि ठहरै कबरै हम

मिठ नागत की कक तकब पबराह ले

जे सट ढे उटित ढे कहरै कबरै हम

अहाँ घोड़ी गवन रूमि की पीरी सुधा कहि

“नरन” लह-ढाकी त महरै कबरै हम

*आख-१३



गजव- ३

हूँका संग निश्च रँदु आगाँ जे डुथि अतिशयक पक्षमे

छनु करै छी नर पवन पुनि नर-क्रांतिक उगनक्षमे

नमन करैत छी हूँका जे संग छनथि रँनि सहभागी

हूँको अग्र के दुब करै जे सत डुथि ठाठ रिपक्षमे

छनु करी अग्रगणन हूँकव जे डुथि त्रलक अग्रश्री

पडराएन डुथि जे अत्राल तनिको आनर सगकक्षमे

कर्मि छै जे कर्मभूमिमे हावत-जीतत रूत सफल

ओ की जाले मोन एकव जे रँस गग डौंछै सुतन कक्षमे

"नरन" बाट ले आरै जकवा तकवा ले सत अगल छैद

घुबराक नुनि ले जकवा से त्रुष्ट तकरो कवते अक्षमे

*आथव-२२

गजव- १

जिगगी भवि रँस रार्थक टिता

मरितहूँ नागन स्रक्षक टिता



अन्नक खगल छै निर्धन टितित

कबए धनिकनो अर्थक टिता

पहिलक भेटैते दमलै नगसा

दम प्रबिते शुभ शेतकक टिता

रैहूअक छुथि रिआहन सभ मावत

काँटफगावकै घष्टकक टिता

आशा हबक लागल छै सभके

ककरो "नरन" ले कर्मक टिता

*मात्रा क्रम: २२२+१२२+२२२

এ বচনগৰ আগল মতৰ ggajendra@videha.com পৰ পঠাউ ।



১. কাশ্মিৰী কাগাশ্মিৰী- আশ্বক পূৰ্ণ কবনে ২. বিনীতা সা- টেন ৩.



জ্যোতি সা চৌধৰী- লিয়া জ্বন্দী সঁ আউ হ (বৈজ্ঞানিক ৩৫ পৰ বিশেষ)

লিয়া জ্বন্দী স২ আউ হ

১



कामिनी कामायनी

आशुिक पूर्ण कवने

पौखरिक माष्टि सँ पितडिया फूटडालि माँजैत/
रात्री ७७ दिन रौड उदाम भऽ गेल डूनीह/
जखन घामक छिष्टा ,माथ सँ उँतारि/
घुँसक आगलरानी /आँटव मे राँहन /
गंगा येयाक पवसाद देलकहि /
हविद्वार सँ आएन डन/ कसु नला कऽ /
माथ पव रौमन डन ,कतेक बास थिम्साक /
सह सह करैत लोक / झूँडे मुँड टाक दिस /
तिन बखराक जप्पह नहि /
उँपवका स्वास उँगले /
निटूनका नीटे /
झुदा सहस्र रौह सल रौँठा /
माय रौरू दुस्र केँ पजिया कऽ भीडकेँ धकियारौँत /
आरि गेला घाँठ पव /
ओ निर्मल, ओ कल कल जल /
डूँरकी पव डूँरकी /



उतबि गेल सत पाप /
रएह तँ ब्रज / आँखिँसँ देखन /
उ हँसी आ शीत सँ गुँजैत ,/
गुदक दवरौव सन सज्जन / मैयाक आवती ।
उग दिन तँ शुकखाते छलै पोथीक /
रौंटेत बहनी कतेको दिन / मास /
सुध रूँ बिसवन /
रौरी संग कतेको मगया सत नगत बहनी उमास /
देती की माते , हुनको ग्रा पुग्य नात /
रौ अहिना कोन मे पडन पडन /
जिहगी होगत बहत थाक ।
मान ज्ञान / पशु /पाथी /
मृतकलै उछाव कवए रानी /
पतितपारिणी /सुलोथ हमबो सरहक रिनाप ।
आ दान पव/
आँगन मे/
उमावा पव/
गोहारी मे /
पोथविक महाड पव/
रौलैत बहलै बिसरौसक पुन/
बुजवनी अपन तबकारी रौट क२/
मनाहीन माड /तेजिन तेन /
बुनगन अपन माँठिक रौसन रौटि /



प्रवहिताग्न लोष्टी / हसुनी /
रौहकी बाधि करैत बहनी रौहक गुमिया
बहि जाति / बहि बन गौबरक प्रमाण /
कतेक दिन सँ एतरो नागन मिया
जे गंगा असननीया जेरो /
आ ओहो माय आरि गेलो / नागि गेलो संगम मे रुद्र /
रिन कोला प्रकथ पातके लोहोवा पाती केल /
मोष्टी मोष्टी रौहल / अवबति /
ठीसल पव / गहुँट गेल बहे/बहा पो क२/ बर बर रम्र मे /
सम्पूर्ण गायक आधा सँ रौसै मनीगण सत /
युन / कालेज मे / पठय / पठरौ रानी रौष्टी / प्रतौह /
अस्पताल मे काज करैत मिष्टैव /
डिग्री धारी नरतुबिया संग /
गायक म्हाथिया सहजो पीसी सेहो /
रुमैत अगना के महान /
रौहवागन डन / सरहक संग /
कवरक नेन अगन कन्या /
माध हेते पूर्ण आर /
कवरक गंगा अन्नान ।

२



रिनीता सा- टैल



टैन

जखन गेलौं टैन नग रैसन,
उ झूठ रिचका क२ गड़ । गेल ।
पहिल घुसल डन अंगना मे,
ल कहि कत२ और रिना गेल ।
जखन गेलौं ओकरा दुनियाँ मे तोक्य,
रिच मे रैष्ट हमर अंगल हेवा गेल ।
कहियो भवमा क२ सपना देखोल डन,
आग काज गडन तँ अंगन मे रैसन छोटि गेल ।
उ जे गेल तँ चनियाे गेल,
दिन-राति रैष्ट सत तकिेत बहि गेल ।

३



ज्याति मा दोहरी

पिया जन्दी सँ आउ ल (रैलेन्टागल डे पव रिशेय)

पिया कथीक अछि एहेन गुमान
अलं किछु तँ रैताउ ल
छोड़ू-छोड़ू ल डोली कहाव
अलं ओहिना न२ जाउ ल २२

आं थि हमर अछि द्वाले पव गाव
पुवी पकराण रैनि बाखन मेवायन
केल रैसन डी मोनह रिगाव
अलं जन्दी स२ आउ ल २२
छोड़ू-छोड़ू ल डोली कहाव
अलं ओहिना न२ जाउ ल २२

साँसक आघात सँ गजोत गड़ लन
दिन भविक असगकथा मोन अघायन
तुनसी टोड़ । पव दीपक कताव



अर्लं घब जगमगाड ल २२
छोड़-छोड़ ल डोली कहाव

अर्लं ओहना न२ जाड ल २२

मंगे न२ जागर अगिना रैव कहनहुँ
रिश्वास बाथिक हम नहि किछ रैजगहुँ
रीतन जाग ओमवक रैनाव
अर्लं काज रिसवाड ल२२
छोड़-छोड़ ल डोली कहाव
अर्लं ओहना न२ जाड ल २२

ई बचनार अण मंतर ggajendra@videha.com पब गछाड ।



१. बाजदेर माडवक दु लोष्ट करिता २.



जगदीश शमाद माडवक दुष्टी गीत

१



बाजदेर माडवक

दुष्टी करिता-

बाजदेर माडवक जीक दुष्टी करिता



दग्ध स्त्र

कनीकेँ म्रव स्त्र

शिक भेन पागन

अन्तवमे किड जागन

जेनक कास हनि

मसमे गगुकेँ थनि

कनी रैजेत अडि अगनहि धूनि-

“मधुमासक आगमन भेन

अहाँ हँसि गेलौ कोन थोन

द्वन्द्व केन रिसवि गोन

के रैलोनक एहेन जेन

जतए छलैत अडि फलेरी थोन

हमरा रैना देलौ रैकजेन

आकि अहाँ रैनि गेलौ मन्त

रियोगक दाहसँ दग्ध डी कन्त

माँटे अन्त अडि रसन्त

किन्तु हमर ले देखै अन्त ।”

अज्ञेयक रस

घब-दुआरिकेँ नीग



हाथमे लेल जलेत दीप
अन्हाकसँ नछराक गच्छा
क२ बहन सयैक प्रतीक्षा
हराक साँका क२ बहन गेन
दीया अगनाकेँ रैछैराक लेन
आँच तब ठूकि गेन
जेना गजोत रसून रैनि गेन
आँथिकेँ अमख्य दीप अस्माएन
जे डन अस्माएन
बाँछ अछि असीम, अगाव
अछन टाकतब अन्हाव
एक दीप अछि ज्वरनित
तँ कबत अलकोकेँ प्रज्वरनित
लसि बहन गेल गहए आस
ठामहि-ठाम गेनत उज्जस ।



खगर्नेने प्रसाद माछव खीक दूषी गीत-

मवम देखि.....

मवम देखि मर्माहत होग छै

मर्मा देखि मर्माहत होग छै ।

डाह मवम मवम देखि

मर्माहत छूक-छूक तले छै ।

तावम-मावम देखि-देखि

तिनमिना तिन-तिन खसै छै ।

तिनमिना तिन-तिन खसै छै ।

मवम देखि..... ।

मर्माक आहत देखि-देखि

घात-अवघात छन्द नलै छै ।



तगव तीव तीड़ा - तीड़ा

सगव देह सकलैधन देखे छै ।

सगहव देह सकलैधन देखे छै ।

मवम देखि..... ।

मर्मा मारि मारि छोड़ा

कमारि मारि मारैत बहे छै ।

अठि - मोड़ा ईटि कस्मी

रौठ-चाठ सकलैधन देखे छै ।

रौठ-चाठ सकलैधन देखे छै ।

मवम देखि..... ।

मर्मा एक दुनियाँ रैनि

जिनगीक पाठ पठैत बहे छै ।

दोसर मवम मरग रैनि

भूत-बाकने छहलैत बहे छै ।

भूत-बाकने छहलैत बहे छै ।

मवम देखि..... ।



छावनि-सुग.....

छावनि-सुग छावनि एलौ

भाय यौ, सुग-छावनि छावनि एलौ।

कथला घाष्ट कथला अगम

रौट पाणि छलिआगत एलौ।

पकड़ि पाँथि सुगला गीधक

छाव छीन छिनिआगत एलौ

भाय यौ, छावनि.....।

कथला सिष्टी रौठ रैनि

संगे-संग पथवागत एलौ।

दोखवा-तेखवा कथला रैनि

झवनी संग तुजागत एलौ

भाय यौ, झवनी संग तुजागत एलौ।

छावनि-सुग.....।

जन्मा सिव गाढ पकड़ि

रौस जाव जलिआगत एलौ।

अकूआ-सुथनी हन पकड़ि



मरिया-अरिया हकागत एलौ

भाय यौ, मरिया-अरिया हकागत एलौ ।

दानमि-मुप..... ।

कवणी-धवणी रैठणी रैमि

अंगल घव रैलवागत एलौ ।

गुड़ १-खुदी खखरी रैमि

गुड़चन्ना-चना चनमि एलौ

भाय यौ, गुड़चन्ना चना चनमि एलौ ।

दानमि-मुप..... ।

ए बचसापव अंगल मतिर ggajendra@videha.com पव पठाड ।



रौन अरुण पाठक- गजन १-२

गजन

मिललौ अंगल दानमँ भेल प्रनकित मोष
रौतन पलव रिवलक भेल हर्षित मोष

हुन अँधि मागव तलिसँ सुनारी उठन
रैललौ तकव रोगसँ भेल रिचलित मोष

रौजन तँ जेना बुनु हुन मलवन अरुसँ
ठोबक मधुव पाषसँ भेल मोलित मोष

उकव रैठन डेगसँ दर्द हरिया उठन



पायनक सुनिते सुव भेन ज़रित मोन

प्रीतक तवाजु पव तौननौ धन अगन
रिवहक दिया जडिते भेन पीडित मोन

रैहले सगीस ,मात्राफ़ा २२१२ २२२१ २२२१

२. गजन

पिया रीन एहि यव बहिये क२ की कवरै
रिवह सन आगिये जडिये क२ की कवरै

अगन कनियाँ जखन कहि ले सकरै हमरा
पिया कवमे अगन धरिये क२ की कवरै

मिराना जखन ले भेटैत तै रूमनौ दुख
गवीरक दुख अहाँ सुनिये क२ की कवरै

उड़ि रै देधि थिनी लोक हमरा यो
समाजक रीति हँसी बहिये क२ की कवरै

जखन दर्दक गनारै ले अहाँ नग यो
तखन रैखा हमर सुनिये क२ की कवरै

रैहले हज्ज ,मात्रा फ़ा १२२२ तीस रैव

ए बचनपव अगन मंतर ggajendra@videha.com पव पठाउ ।



१. रिन्दुयैव ठाकुर लंगोवी - प्रेम / गजन २. प्रमित शिरी - गजन १-२



१



रिन्दुयैव ठाकुर लंगोवी
धनया लंगोवी , सन:कताव



प्रेम / गजन

१

प्रेम

ले मोटु ले घरवाड अहाँ
एक दिन हम जकब अहाँ
संगमे दनै, तिहार तथा
आजैगठिगठि मेहो मनाएँ । ।

दुग्ध कतरौ दुग्धवगव होगतो
नाथ लोमक रीट होग छै
प्रीतम दुब पहाडगव होगतो
घब-आङ्गक रीट होग छै । ।

आजुक दिन प्रेमक प्रतीक
प्याव करी मे मना करै
अहाँ संगक संगड़ १-प्याव
दुग्ध हमरा याद अछै । ।

२

गजन

देखरै मनागानी कतेक दिन करै छी
रिधरा संग कहानी कतेक दिन करै छी

समय चक्रमे अछै द्रुवछाँ
जीरणक ग्रामि कतेक दिन करै छी

मानर भ२ मानरता सीधु
दोसबक ग्रामि कतेक दिन करै छी

मनिष ले करि विधिवक संकृति
रौश्या - बुद्धिक दुवानी कतेक दिन करै छी

समयमे एखला निक पथ लोखु
मानरताक ग्रामि कतेक दिन करै छी

२



सुमित मिश्र
कवियज्ञ ,समाप्तृपूव

गज्ज-1

पहाड सग ठकलेरौक जेन अछेन रिश्राम चाली
ले मिसा सके एहन ज्ञानादुखीके प्रकामि चाली

पिंजवाक रँधन मे रँध पंडी कोना क२ उडि सकत
कोना सगला पुवा कवरौक जेन दूअ आकामि चाली

कलेज पव छेष्ट कलेत भरिया केव किछु सराज
नीग रा मोती पारै जेन सागव पिरोक पिसास चाली

अन्हालेमे आयन दिसकव सँ समाव बोमिष ठे
अन्हालता सँ ज़ीतरौक जेन निवतव प्रयास चाली

अ चलायमाण दुनिया अन्तरवत चलेत बहत
दूदा अचन नाम जेन पठचाष किछु खाम चाली

माष्टि पव गिवन फुल सँ भी घब-आँगन गमकत
दूदा ठमवायन रौंठेमे सली बाहके तनामि चाली

प्रुपा कवरै माँ मोवदे आरि नार हँसत मँमथाव
हलेक खेन ज़ीत सकी सुमित के एतरे अमि चाली

रर्ष-20

गज्ज-2

सरँछी मोमक रात हुनक आँखि रँता गेन
रँहन एहन रँसात हमर होमि उड 1 गेन

नदीकेँ धावकेँ रिगरीत चनराक कोमिने
तमैत ज़ा बहन स्रग्न सरँ किछु हेवा गेन

पाथवगव फुल उगायन ज़ुनि ठे कठिन
डेगहि-डेग मिनन निवामि अमि ज़गा गेन

स्वार्थक रँदवी मगरतापव मँडवायन
ताग-तागमे दुग्गली गामक-गाम ज़वा गेन



मृत्युतिकै सकसोरोत नर जगनाके दोड
लोक-नाज गम अगम उपस्थिति देखा गेल

गवरी केव नती छूँ ओव नतवन अछि
गमकेत हुनरोडी "स्मृति" गम भविष्ये सुखा गेल

रूप-17

ए बचनगव अगम मंतर ggajendra@videha.com गव गछाउ ।



१. जगति सा टोषरी २. राजनाथ मिश्र (द्वितीय मिथिला) ३. उमेश
मंडन (मिथिलाक रसपति/ मिथिलाक जीव-जन्तु/ मिथिलाक जिनगी)

१.



जगति सा टोषरी



बाजनाथ मिश्र

द्विमास मिथिला झागड शो

द्विमास मिथिला (<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>)



३.



डॉ. रमेश शर्मा

मिथिलाक रणसंपत्ति झागड शो

मिथिलाक ज़र-जुड़ु झागड शो

मिथिलाक ज़िन्गी झागड शो

मिथिलाक रणसंपत्ति/ मिथिलाक ज़र जुड़ु/ मिथिलाक ज़िन्गी

(<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>)

ई बचानाक अपन मतेर ggajendra@videha.com पब पठाउ ।

बौनाना प्रते



१. गंज टोखी "नरनशी" - बौन गज्ज १-३ २.



अमित मिश्र- बौन कबिता १-३

१



गंज टोखी "नरनशी"

बौन गज्ज-१



संगी सभके संगे लै छी

छन तैया निकसिक मनरै छी

माँ देते टिकस आ टाँव

बाँकी बाँरु के कहि दे छी

टूटा जावनि रौसल आले

आ सभकिछ मिनिजुनि पकरै छी

तीमल करगव मिठगव तसग

गुनी आ हनुआ रँगरै छी

केवा पातक थावी सुलव

तुँ सभ रैसै हम पवसै छी

“सरनसँ” कहि दे एते ओहो

सगड़ १-सामष्ट सभ हिसरै छी

आता एम-आठ ठो दीर्घ सभ गाँतिमे

० पंकज टोषवी “सरनशी”



बौध गजव-२

देख भेलै तौव तैया

आरै आनस छोड़ तैया

दाय-रौरा माय-रौरू

नाग सभके गोव तैया

गाढ नीमक डूँट रैड डै

छटि क दतमणि तोड़ तैया

धो क झूँट छे ल नहा नी

बुख मावस जौव तैया

दामि रैसी भात जे कम

खुरे थो तिमकोव तैया

था क प्रणि पोथी न रैसी

छन पठे छी पोड़ तैया



छन छलै छी खेन खेनरै

रैनि सिगानी-छेव भैया

अ मिलहक ताग कहियो

होय लै कमजोव भैया

तौ "नरन" भैया हमर छै

हम रहिनिया तौव भैया

*रैहले बगन/गात्रा फम-२५२२+२५२२

० पंकज टोपरी "नरनश्री"

रौप गजव-३

टाव पव फचरौत कौश

सभ मलगी दैत कौश

छै पव रैसन त कथला

मेघमे डमकैत कौश



ताकि गोपी लाल माले

गाढ पब हृदकेत कोश

काग दम ठी मूस एगो

ताहि ले मगड़ेत कोश

डीन हाथक मल जिलेरी

उडल पुनि रहसत कोश

एँठ रामन देखि दोगन

अल ले तबसेत कोश

भोज अँगन भाग जाली

पात पब बृधकेत कोश

मृगमे खुदी पमावन

दाग छुनि उडलैत कोश

देखि मृतन दाग के पुनि

मृग दिस समलैत कोश

"वरन" कागक अजरै नीना

लोक के नटलैत कोश



*रैहले बगन/गात्रा फ़ा-२९२२+२९२२

० पंकज टोषरी "नरनशी"

२



अमित मिश्र
कवियन ,समस्तौश्व मिथिला ,बिहार

अमित मिश्र

रौन करिता

1

पतंग रैनारै ले

पल्ली कागत फाड़ ले
सुख पतंग रैनारै ले
मैदान रैछी भले ले
नाल आगिपव रैबकारै ले
नम-नम जेग रैनारै ले
साकक काठी आले ले
सोधा आ गोल बाथे ले
कागतक टिप्पी माँटे ले
नय्या कागत काँटे ले
कोशपव गुँडवी रैनारै ले
रैहते बागा आले ले
दु दिनें भुव कले ले
छन गृद्धीकै नाथे ले
कनिये कान सुथारै ले
दैरा परन रैनारै ले
छन पतंग उड़ लै ले
रौधे रौधे दौड़ ले
अय्यवमे पतंग नाँटे ले
गीटा रुमाँ सँ गारै ले
सँ मिन पतंग रैनारै ले



२

रौराकेँ

मोठका नागी रौराकेँ
रैडका रैष्टी रौराकेँ
घब आँगन गुँजि बहन
प्रेम भवन हैमी रौराकेँ

भवन चुलौठी रौराकेँ
काण कलौठी रौराकेँ
नर नर सरकसँ छै भवन
सरैछी देन मोथी रौराकेँ

कर्ता - मोती रौराकेँ
कशीक मोती रौराकेँ
एथला सरैछी गमाद अछि
थिम्मा-पिहानी रौराकेँ

डाँव मुकन रौराकेँ
दाँत छुँछन रौराकेँ
कहियाँ एथिष भगवान घबसँ
कते मान भेन देखन रौराकेँ

३

उसनन अडाक त्राय

एकछी बाजा छुँछन पुवमे
बाज करै छन रैड नीकसँ
एक दिन छलै अजगत छलै
मोणमारै पकडल एलै मोणमा
मोणमा कहनक मोणमारै देखु सबकाव
छोवा क२ खेनक उसनन अडा वाति अन्हाव
अन्डसँ मुगी रहलैते
उरिसँ रहते दूगी होगते
रैट रैट खुर पाग कमैते
रैडका गाडी रैगना किनैते
एकवा दिउ सजा कड़ाग
हमवा दिखारु सरैछी पाग

बाजा रहते मोटमे पडन
धियासन सरैछी गप बुमन
बुमि गेन मोणमारै छलि
बुमिक कान छेनक हानि-हानि
बाजा कहनक सुन लै मोणमा
दौडन छलि जे अपन अगना



रैबुबक गाढगव आम ठै हवव
तोडल आरौ सरैठा पाकव

कोणमारै माथा चकलेले
रैबुबमे आम कतसँ एले
बाजारै मिज शिका कहनक
बाज तखन गग रूमेनक
जहिना रैबुबमे ले आम फड़ै ठै
तहिना उमन अलसँ ले मृगी जलमे ठै
कोणमा मानक अपन गवती
मोणमारै भ२ गेलै दोन्ती
आय देखि रैड तानी राजन
गाँगवि दारि क२ कोणमा भागव

ए बचोपव अपन मतिर ggajendra@videha.com पव पठाउ ।

रैठा लेकनि द्वारा स्वकीय श्लोक

१. प्रीति: कान अलङ्कृत (सूर्योदयक एक गंठा पहिल) सरप्रथम अपन दुनु हाथ देखराक चाली, आ ग
श्लोक रैजराक चाली ।

कवात्रे रसते नक्षी: कवमरा सबसती ।

कवमले हितो अँहा प्रभाते कवदर्शनम् ॥

कवक आगाँ नक्षी रसते छथि, कवक मध्यमे सबसती, कवक मूलमे अँहा हित छथि । भोवमे तहि द्वाले
कवक दर्शन कवराक थीक ।

२. मध्या कान दीप लेसराक कान-

दीपमूले हितो अँहा दीपमरा जगदर्शन: ।

दीपात्रे शिखर: प्राकृत: संध्याज्यातिर्गमोऽस्तुते ॥

दीपक मूल भागमे अँहा, दीपक मध्यभागमे जगदर्शन (रिष्ट) आ२ दीपक अग्र भागमे शिखर हित छथि ।
हे मध्याज्याति ! अहाँकै नमस्कार ।

३. सुतराक कान-

वार्ग कर्ण लघुमस्तु रैणतेर्य बृकोदवम् ।

शेयले य: सलेख्यं दु:स्वप्नस्तु नष्टति ॥



जे सत दिन स्वतंत्राँ पहिल बाग, कमावबन्ना, हनुमान्, गकड आरं भूमिक साका करैत छथि, हुनकर दूःस्वप्न नष्ट भऽ जागत छति ।

४. नहरौक समय-

गर्भ ट यक्ष्ण टैर गोदारवि सब्रति ।

नर्मदे सिङ्ग कारेवि जने२गिन् सन्निधि करु ॥

हे गर्गा, यक्ष्णा, गोदारवी, सब्रती, नर्मदा, सिङ्ग आरं कारेवी धार । एहि जनमे अंगन साक्षिध दिख ।

३. उतुवै यमसुन्दर्य हिमाद्रिश्चर दक्षिणम् ।

रयै तत् तावतं नाम तावती यत् सन्ततिः ॥

सुन्दरक उतुवमे आरं हिमाद्रिक दक्षिणमे तावत अछि आरं उतुका सन्तति तावती कहलैत छथि ।

३. अहम्ना द्रौपदी सीता तावा मन्दादरी तथा ।

पञ्चक वा सरेस्त्रिं महापातकशिकम् ॥

जे सत दिन अहम्ना, द्रौपदी, सीता, तावा आरं मन्दादरी, एहि पाँट साक्षी-स्त्रीक साका करैत छथि, हुनकर सत पाप नष्ट भऽ जागत छति ।

१. अश्विथोमा रैनिर्वासो हनुमान् रितीयाः ।

पुंगः पञ्चवामश सन्तति चिब्रिरीषः ॥

अश्विथोमा, रैनि, वाम, हनुमान्, रितीया, पुंगार्य आरं पञ्चवाम- जा सात ठाँ चिब्रिरी कहलैत छथि ।

+साते भरत सुशीता देरी शिखर रासिनी

उग्रेश तपसा नट्टा यया पञ्चपतिः पतिः ।

सिद्धिः साक्ष सतामन्त्र प्रसादान्त्र धूर्जटेः

जाह्नवीहर्षणनेथेर यन्त्रि शिषिः कला ॥

९. रौद्रोऽहं जगद्वन्द न ये रौद्रा सब्रती ।

अपूर्णे पटमे रयै रय्यामि जगत्त्रयम् ॥

१०. दूर्वाक्षित मन्त्रशुक्ल यजुर्देव अध्याय २२, मंत्र २२)

आ अरुह्यन्त्र प्रजापतिवन्द्यः । रितोक्तता देवताः । स्वाङ्कुकैतिष्ठन्दः । यङ्जः स्वः ॥



आँ ब्रह्मन् ब्रह्मणो ब्रह्मरत्नी ज्ञायतां वाञ्छन् वाञ्छन्ः शुभेऽग्यरातिराधी महावधो ज्ञायतां दोग्ध्री
प्रेमरौठलङ्घनाशुः सतिः प्रवर्ज्योरा जिह्वा वप्रेयाः सतेयो हराशु यज्ञमानशु रीरो ज्ञायतां निकामे-
निकामे नः प्रज्ज्या रयितु फलरवा नउयधः पछन्ता योकोक्यो नः कम्पताम् ॥ २२ ॥

मन्त्रार्थः सिद्धयः सत् पूर्णः सत् मन्त्रार्थः । शिव्यां बुद्धिनामोऽस्तु मित्राद्भयस्तु ।

ॐ दीर्घावर्त । ॐ सौभाग्यरती भव ।

हे भगवान् । अग्न देमिमे सुयोग्य आ सूरत रिद्यार्थी उपेन्न होथि, आ शुक्लै नमि कश्चित् सन्निक
उपेन्न होथि । अग्न देमिक गाय थुँ दूध दय रानी, रैवद भाव रहन कवयमे सक्षम होथि आ योड्ड ।
ह्रित कपेँ दोगय रैना होथि । स्त्रीगण नगवक लहन्न कवयमे सक्षम होथि आ हरक सतामे उज्जपूर्ण
भाषण देरयरैना आ लहन्न देरयमे सक्षम होथि । अग्न देमिमे जखन आरुष्टक होय रय्या होथि आ
उयधिक-रुष्टी सूरदा परिपक्व होगत बहए । एरै ह्ये सत तवहै हमरा सन्निक कयाण होथि । शिवुक
बुद्धिक नमि होथि आ मित्रक उदय होथि ॥

मन्त्रार्थे कोन रतुक गडा कवरौक चाही तकव रनि एहि मन्त्रे कएन गेल अछि ।

एहिमे राचकश्रुतागमान्ड काव अछि ।

अग्नय-

ब्रह्मन् - रिद्या आदि ग्रामँ परिपूर्ण ब्रह्म

वाञ्छन् - देमिमे

ब्रह्मरत्नी-ब्रह्म रिद्याक तेजसँ हकत

आ ज्ञायतां- उपेन्न होथि

वाञ्छन्ः -वाञ्छा

शुभेऽ- रिना डव रैना

अग्यरा- रीण छेरौमे निष्ठा

रतिराधी-शिवुकै ताका दय रैना

महावधो-पेय बथ रैना रीव

दोग्ध्री-कामना(दूध पूर्ण कवए रानी)

प्रेमरौठलङ्घनाशुः प्रेम-लौ रा रानी रौठलङ्घा- पेय रैवद नाशुः -आशुः-ह्रित

सतिः-योड्ड ।



पुवञ्चर्योरा- पुवञ्च- रावरावकेँ पाका कव रानी योरा-रानी

जिञ्च-शेकुकेँ जीतए रानी

वञ्चरा:-वथ पव हिव

सञ्चयो-उत्तम सञ्चामे

हराञ्च-हरा जेहण

मञ्चमाणञ्च-बाजाक बाजामे

रीयो-शेकुकेँ पवाजित कवएरानी

मिकामे-मिकामे-मिष्टमहकत कार्यामे

न:-हमरा सञ्चक

पञ्चरा-मेघ

रयञ्च-रया होए

मनरा-उत्तम मन रानी

उयञ्च:-उयञ्च:

पञ्चरा-पाका

योञ्चयो-अनञ्च नञ्च कनेराक हेतु कएन जेन योञ्चक बञ्चा

न:-हमरा सञ्चक हेतु

कञ्चताम्-समर्थ होए

त्रिञ्चथक अञ्चराद- हे अञ्चरा, हमरा बाजामे अञ्चरा नीक धार्मिक विद्या रानी, बाजञ्च-रीव,तीव्रदाज, दुध दए रानी गाय, दौगय रानी जञ्च, उञ्चमी नारी होथि । पञ्चरा आरञ्चकता पञ्चरा पव रया देथि, मन देन रानी पाञ्च पाका, हम सञ्च सञ्चि अञ्चि/मञ्चि कवी ।

8.VI DEHA FOR NON RESIDENTS

8.1 to 8.3 MAITHILI LITERATURE IN ENGLISH

8.1.1.The Comet -GAJENDRA THAKUR translated by Jyoti Jha chaudhary



8.1.2.The _Sci ence_of _Wor ds – GAJENDRA THAKUR translated by the author himself

8.1.3.On _the _dice _board _of _the _mill ennium- GAJENDRA THAKUR translated by Jyoti Jha chaudhary

8.1.4.NAAGPHANS (I N ENGLI SH)- SHEFALI KA VERMA translated by Dr . Raji v Kumar Verma and Dr . Jaya Verma

Send your comments to ggajendra@videha.com

विदेह नूतन एक भाषागत वचनालेखन-

अभिज्ञान-मैथिली- / मैथिलीकोश-अभिज्ञान- प्रोजेक्टके आगु रीढ़ डि, अगल सुमार आ योगदान अ-
मेन द्वारा ggajendra@videha.com पब पठाई ।

**१.भावत आ लपानक मैथिली भाषा-ऐतानिक लोकनि द्वारा रैनाउव मालक मोदी आ २.मैथिलीमे भाषा
सम्पादन पाठ्यक्रम**

१.लपान आ भावतक मैथिली भाषा-ऐतानिक लोकनि द्वारा रैनाउव मालक मोदी

१.१. लपानक मैथिली भाषा ऐतानिक लोकनि द्वारा रैनाउव मालक उटका आ लेखन मोदी

(भाषाशास्त्री डा. बाभारताव यादवक धाकाके पूर्ण कर्मा सञ्च नः निर्धारित)

मैथिलीमे उटका तथा लेखन

१. पञ्चमाक्षर आ अक्षरावः पञ्चमाक्षरावृत्तत ७, ए१, ए२, ए३ ए४ म अरैत अछि । संस्कृत भाषाक अक्षराव
निर्देशक अन्तर्मे जाहि रक्षक अक्षर बहैत अछि ओही रक्षक पञ्चमाक्षर अरैत अछि । जेना-

अई (क रक्षक बहुरीक कावणे अन्तर्मे ७ आएन अछि ।)

पञ्च (ट रक्षक बहुरीक कावणे अन्तर्मे ए१ आएन अछि ।)

खन्ड (ठ रक्षक बहुरीक कावणे अन्तर्मे ए२ आएन अछि ।)

सन्धि (त रक्षक बहुरीक कावणे अन्तर्मे ए३ आएन अछि ।)

खन्ध (प रक्षक बहुरीक कावणे अन्तर्मे ए४ आएन अछि ।)

उपरांत रीत मैथिलीमे कम देखन जागत अछि । पञ्चमाक्षरक रीदनामे अधिकानि जगहपब अक्षरावक
प्रयोग देखन जागछ । जेना- अक, पट, खड, सधि, खंड आदि । र्याकवर्गिद पण्डित गोविन्द नाक
कहैरुं छनि जे करञ्ज, चरञ्ज आ ठरञ्जसँ पूर्ण अक्षराव निखन जाय तथा तरञ्ज आ परञ्जसँ पूर्ण पञ्चमाक्षर



निखन जाए। जेना- अक, टाँन, अँडा, अँतु तथा कम्पन। मूदा हिन्दीक निकट बहन आधुनिक लेखक एहि रीतकेँ नहि मानैत छथि। ओ लोकनि अँतु आ कम्पनक जगहपर सेहो अँत आ कम्पन लिखैत देखन जागत छथि।

बरीष गह्वति किछु स्वरिवाजसक अरुष्ट छैक। किएक तँ एहिमे समय आ स्थानक रँचत होगत छैक। मूदा कतोक रँव हस्तलेखन वा मूदामे अक्षरावक छोट सन रिन्दू स्पष्ट नहि भेलसँ अर्थक अन्वर्थ होगत सेहो देखन जागत अछि। अक्षरावक प्रयोगमे उँचावाँ-दोषक सम्वारणा सेहो ततरै देखन जागत अछि। एतदर्थ कसँ न२ क२ परखा धरि पञ्चमालेक प्रयोग कवरँ उँचित अछि। यसँ न२ क२ उँ धरिक अक्षरक सञ्ज अक्षरावक प्रयोग कवरँमे कतहु कोणा विवाद नहि देखन जागु।

२.४ अँ ट : ठक उँचावाँ ~ व हँ जकाँ होगत अछि। अतः जतः ~ व हँ क उँचावाँ हो ओतः मात्र ट निखन जाए। आन ठाम खाली ट निखन जएँरक छली। जेना-

ठ = ठाकी, ठेकी, ठीठ, ठेँआ, ठसँ, ठेरी, ठाकनि, ठाँ आदि।

ठ = गढ़ाँग, रँठरँ, गठरँ, मठरँ, रँठरँ, साँठ, गाठ, बीठ, चाँठ, सीठ, पीठ आदि।

उपह्रास शब्द, सबकेँ देखनासँ अ स्पष्ट होगत अछि जे साधारणतया शब्दक शुरुमे ठ आ मध्य तथा अन्तमे ठ अँरैत अछि। एहमे नियम ड आ डक सम्पर्त सेहो लागू होगत अछि।

३.२ अँ रँ : मैथिलीमे ~ रँ क उँचावाँ रँ कएन जागत अछि, मूदा ओकरा रँ कएमे नहि निखन जएँरक छली। जेना- उँचावाँ : रँण्णथ, रँण्ण, रँरँ, देरँता, रँण्ण, रँरँ, रँण्ण आदि। एहि सबक स्थानपर फ्रान्सीः रँण्णथ, रँण्ण, रँरँ, देरँता, रँण्ण, रँरँ, रँण्ण निखँरक छली। सामान्यतया र उँचावाँक लेन ओ प्रयोग कएन जागत अछि। जेना- ओकीन, ओजह आदि।

४.५ अँ ज : कतहु-कतहु ~ यँ क उँचावाँ ~ जँ जकाँ करैत देखन जागत अछि, मूदा ओकरा ज नहि निखँरक छली। उँचावाँमे यड़, जदि, जहना, जूग, जारँत, जोगी, जदु, जम आदि कहन जएँरना शब्द, सबकेँ फ्रान्सीः यड़, यदि, यहना, यग, यारत, योगी, यदु, यम निखँरक छली।

३.६ अँ य : मैथिलीक रतिनीमे ए आ य दुनु निखन जागत अछि।

प्राचीन रतिनी- कएन, जाए, होएत, माए, भाए, गाए आदि।

बरीष रतिनी- कयन, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि।

सामान्यतया शब्दक शुरुमे ए मात्र अँरैत अछि। जेना एहि, एणा, एकव, एहण आदि। एहि शब्द, सबक स्थानपर यहि, यणा, यकव, यहण आदिक प्रयोग नहि कवरँरक छली। यद्यपि मैथिलीभाषी थाक सहित किछु जातिमे शब्दक आवस्थामे ~ एँकेँ य कहि उँचावाँ कएन जागत अछि।

ए आ ~ यँ क प्रयोगक सम्पर्तमे प्राचीन गह्वतिक अनुसंधान कवरँ उपग्रह माणि एहि पत्रिकामे ओकरे प्रयोग कएन गेल अछि। किएक तँ दुनुक लेखनमे कोणा सहजता आ दृक्कताक रीत नहि अछि। आ मैथिलीक सरिमाधायक उँचावाँ-मैथिली यक अपेक्षा एसँ रँसी निकट छैक। थाम क२ कएन, हएँ आदि



कतिपय शिष्टकेँ केन, हेर आदि कगमे कतहू-कतहू निखन जखर सैहो “ए” क प्रयोगकेँ रैसी समीचीन प्रमाणीत करैत अछि ।

३. हि, हु तथा एकाव, ओकाव : मैथिलीक प्राचीन लेखन-परम्परामे कोला रौतपर रैन दैत कान शिष्टक पाछाँ हि, हु नगाउन जागत छैक । जेना- हुनकहि, अगनहु, ओकवहु, तकोनहि, छेष्टहि, आनहु आदि । रूदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थापन एकाव एरि हुक स्थापन ओकावक प्रयोग करैत देखन जागत अछि । जेना- हुनके, अगला, तकाने, छेष्ट, आला आदि ।

१. य तथा थ : मैथिली भाषामे अधिकशितः यक उँचाव थ लागत अछि । जेना- यडल (थडल), योडनी (थोडनी), यष्टको (थष्टको), वृषे (वृथे), सन्नाय (सन्नाथ) आदि ।

४. घनि-लाग : निम्नलिखित अवस्थामे शिष्टक घनि-लाग भऽ जागत अछि:

(क) क्रियाव्ययी प्रत्य अयमे य रा ए वृथ भऽ जागत अछि । ओहिमे सँ पहिले एक उँचाव दीर्घ भऽ जागत अछि । ओकव आगाँ लाग-सूचक छिन रा रिकारी (/ २) नगाउन जागछ । जेना-

पूर्ण कप : पठए (पठय) गेलाह, कए (कय) जेन, उँठए (उँठय) पडतौक ।

अपूर्ण कप : पठ गेलाह, क जेन, उँठ पडतौक ।

पठऽ गेलाह, कऽ जेन, उँठऽ पडतौक ।

(ख) पुरिकानिक प्रत्य आय (आए) प्रत्यमे य (ए) वृथ भऽ जागछ, रूदा लाग-सूचक रिकारी नहि नगाउन जागछ । जेना-

पूर्ण कप : थाए (य) गेन, पठाए (ए) देरै, नहाए (य) अएलाह ।

अपूर्ण कप : था गेन, पठा देरै, नहा अएलाह ।

(ग) स्त्री प्रत्य गक उँचावण क्रियापद, सङ्का, ओ विशेष तीनुमे वृथ भऽ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : दोसरि यानिनि छनि गेनि ।

अपूर्ण कप : दोसर यानिन छनि गेन ।

(घ) वर्तमान प्रदन्तक अन्तिम त वृथ भऽ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : पठैत अछि, रँजैत अछि, गलैत अछि ।

अपूर्ण कप : पठै अछि, रँजै अछि, गलै अछि ।

(ङ) क्रियापदक अरमाण गक, उँक, एँक तथा हीकमे वृथ भऽ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप: छियोक, छियोक, छलीक, छोक, छैक, अरिँतेक, होगक ।

अपूर्ण कप : छियौ, छियौ, छली, छौ, छै, अरिँते, होग ।



(ट) फ्रियापदीय प्रत्यय ह, हू तथा हकावक लोग भ२ जागड । जेना-

पूर्ण कण : डहि, कहवहि, कहवहुँ, गेनह, नहि ।

अपूर्ण कण : डनि, कहवनि, कहवौँ, गेनह, नग, नमि, ले ।

९. ध्वनि स्थानान्तरण : कोला-कोला स्वर-ध्वनि अणुना जगहसँ हटि क२ दोसर ठाम छनि जागत अछि । खास क२ द्यौय ग आ उँक सङ्गमे ग रात नागु होगत अछि । मैथिलीकषा भ२ गेन शेट्क मर्या रा अस्तुमे जँ द्यौय ग रा उँ आरँ तँ ओकव ध्वनि स्थानान्तरित भ२ एक अकव आगाँ आरि जागत अछि । जेना- गेनि (गेण), पाणि (पाण), दाहि (दागन), माष्टि (मागष्टि), काड (काड्ड), मास (माडस) आदि । ह्ददा तसेम शेट्, सभमे ग निश्चय नागु नहि होगत अछि । जेना- बमिकेँ बगम आ स्वागिकेँ स्वाडस नहि कहन जा सकैत अछि ।

१०. हनन्त () क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया हनन्त () क आरंभिकता नहि होगत अछि । कावण जे शेट्क अस्तुमे अ उँटावण नहि होगत अछि । ह्ददा संस्कृत भाषासँ जहनाक तहिना मैथिलीमे आएन (तसेम) शेट्, सभमे हनन्त प्रयोग कएन जागत अछि । एहि पोथीमे सामान्यतया सम्पूर्ण शेट्केँ मैथिली भाषा सङ्गहि निश्चय अनुसार हनन्तरिण बाखन गेन अछि । ह्ददा बाकवण सङ्गहि प्रयोजक जेन अवरंथक स्थानव कतहू-कतहू हनन्त देन गेन अछि । प्रस्तुत पोथीमे मैथिली लेखक प्राप्तिन आ नरीन दुनु शैलीक सवन आ समीप्तिन पक्ष सभकेँ समेटि क२ रर्ष-रिगाम कएन गेन अछि । शुष आ समयमे रँटतक सङ्गहि हन्त-लेखन तथा तर्कनीकी दृष्टिसँ सेहो सवन होरँरँना हिमरँसँ रर्ष-रिगाम गिनाउन गेन अछि । रतिमान समयमे मैथिली मातृभाषी पर्यन्तकेँ आन भाषाक माध्यमसँ मैथिलीक ज्ञान जेरँ पडि बहन परिश्रेष्ठमे लेखनमे सहजता तथा एककपतागव ध्यान देन गेन अछि । तखन मैथिली भाषाक मुन विशेषता सभ कृषि नहि होगक, ताहू दिस लेखक-मंडन सचेत अछि । प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. बागारताव यादवक कहँ डनि जे सवनताक अनुसन्धानमे एहन अनुशा किम्व ल आरँ देरँक छी जे भाषाक विशेषता डहिमे पडि जाए ।

-(भाषाशास्त्री डा. बागारताव यादवक धाकाकेँ पूर्ण कणसँ सङ्ग न२ निर्धारित)

१.२. मैथिली अकादमी, गैरा द्वाव निर्धारित मैथिली लेखन-शैली

१. जे शेट्, मैथिली-साहित्यक प्राप्तिन कानसँ आग धरि जाहि रर्तनीमे प्रचलित अछि, से सामान्यतः ताहि रर्तनीमे लिखन जाय- उँदहवणार्थ-

ग्राह

एख

ठास

जकव, तकव

तनिकव

अछि

अग्राह



अथन, अथनि, एथन, अथनी
ठिगा, ठिना, ठमा
जेकब, तेकब
तिनकब। (रैकपिक कर्षे ग्राह)
अँड, अहि, ए।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक कर्ष रैकपिकतया अगनाउन जाय: भ२ गेन, भ३ गेन वा भ४ गेन। जा
बहन अँडि, जाय बहन अँडि, जअ बहन अँडि। कब गेनाह, वा कबय गेनाह वा कबए गेनाह।

३. प्राचीन मैथिलीक 'ह' ध्वनिक स्थानमे 'न' लिखन जाय सकैत अँडि यथा कहननि वा कहनहि।

४. 'ए' तथा 'उ' ततय लिखन जाय जत स्पष्टतः 'अग' तथा 'अँड' सदृश उच्चारण गच्छ हो।
यथा- देखेत, डलेक, लौआ, डौक गलादि।

५. मैथिलीक निम्नलिखित शब्द एहि कर्षे प्रयुक्त होयत: जेह, सैह, गेह, उँह, लेह तथा देह।

६. ह्रस्व अकारांत शब्दमे 'ग' के वृत्त कबई सामान्यतः अग्राह थिक। यथा- ग्राह देखि आरैह,
मानिनि गेनि (मन्त्रय मात्रमे)।

७. स्वतंत्र ऊर्ध्व 'ए' वा 'य' प्राचीन मैथिलीक उच्चारण आदिमे तँ यथारत राखन जाय, किंतु आधुनिक
प्रयोगमे रैकपिक कर्षे 'ए' वा 'य' लिखन जाय। यथा:- कयन वा कएन, अयनाह वा अएनाह,
जाय वा जाए गलादि।

८. उच्चारणमे दु स्ववक रीट जे 'य' ध्वनि स्वतः आरि जागत अँडि तकरा लेखमे स्थान रैकपिक कर्षे
देन जाय। यथा- धीआ, अँडेआ, रिआह, वा धीया, अँटेया, रियाह।

९. सांख्यिक स्वतंत्र स्ववक स्थान यथार्थतः 'अ' लिखन जाय वा सांख्यिक स्वव। यथा:- मैआ, कनिआ,
किवतनिआ वा मैआँ, कनिआँ, किवतनिआँ।

१०. कावकक रिक्तित्वक निम्नलिखित कर्ष ग्राह:- हाथकै, हाथन, हाथे, हाथक, हाथमे। 'मे' मे अग्न्याव
सरथा लज्जा थिक। 'क' क रैकपिक कर्ष 'केव' राखन जा सकैत अँडि।

११. पुराकालिक क्रियापदक रौद 'कय' वा 'कए' अरय रैकपिक कर्षे नगाउन जा सकैत अँडि।
यथा:- देखि कय वा देखि कए।

१२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माँ, भाँ गलादि लिखन जाय।

१३. अँह 'न' ओ अँह 'य' क रौदना अग्न्याव नहि लिखन जाय, किंतु भागीक स्वरिवाँ अँह 'उ',
'ए', तथा 'य' क रौदना अग्न्यावो लिखन जा सकैत अँडि। यथा:- अँह, वा अँक, अँयन वा अँयन,
कँठ वा कँठ।

१४. लनत छि निश्चयतः नगाउन जाय, किंतु रिक्तित्वक संग अकारांत प्रयोग कएन जाय। यथा:-
लौआन, किंतु लौआनक।

१५. सत एकन कावक छि शब्दमे सँठा क लिखन जाय, सँठा क नहि, सँघाउ रिक्तित्वक हेतु फवाक
लिखन जाय, यथा यव पवक।



१३. अग्रगण्यक ले चन्द्रबिन्दु द्वारा राख कयल जाय। पर्वत द्वाक स्वरिधार् हि सगल जेठन मात्रागव अग्रगण्यक प्रयोग चन्द्रबिन्दुक रचना कयल जा सकैत छि। यथा- हि केव रचना हि।

१४. पूर्ण विवाह पामिस (।) मूठित कयल जाय।

१५. सगल पद सगल क लिखल जाय, रा हागल्लसँ जोडि क , हठी क बहि।

१६. लिख तथा दिख मेहमे रिकारी (२) बहि नगाउन जाय।

२०. अक देरनागरी कयमे बाखल जाय।

२१. किछ धुनिक लेव नरीन छि रनरीउन जाय। जा अ बहि रनर अछि तबत एहि दुनु धुनिक रचना प्ररित अय/ आय/ अय/ आय/ आउ/ अउ लिखल जाय। आकि ए रा ओ सँ राख कयल जाय।

ह.।- लारिन्द सा ११/१/१३ लीकानु अरुव ११/१/१३ बरुन्द सा बरुव ११/०४/१३

२. मैथिलीमे भाषा सगल पामिस

२.१. उठाका निर्देश: (बोले कय कय ब्राह्म):-

दुनु न क उठाकामे दौतमे जीह सठत- जेना रोजू नाम, द्वाक न क उठाकामे जीह मूठामे सठत (ले सठैत उठाका दोय अछि)- जेना रोजू गणेश। तबरा मेमे जीह तबसँ, यमे मूठसँ आ दुनु ममे दौतसँ सठत। निगाँ, सत आ मोया रोजि कइ देखू। मैथिलीमे स केँ रैदिक संकृत जकाँ अ सेहो उचित कयल जागत अछि, जेना बर्या, दोय। य अलको सगल ज जकाँ उचित होगत अछि आ न ड जकाँ (यथा संयोग आ गणेश सजोग आ

पडसे उचित होगत अछि)। मैथिलीमे र क उठाका रू ने क उठाका स आ य क उठाका ज सेहो होगत अछि।

ओहिना द्वाक ग रैनीकाम मैथिलीमे पहिल रोजल जागत अछि काका देरनागरीमे आ मिथिलाकयमे द्वाक ग अक्षरक पहिल लिखल जागत आ रोजल जागत छै। काका जे हिन्दीमे एकद दोयपूर्ण उठाका होगत अछि (लिखल त पहिल जागत अछि द्वाक रोजल रौदमे जागत अछि), से शिक्षा पछतिक दोयक काका हम सत ओक उठाका दोयपूर्ण ठगसँ कइ बहन छी।

अछि- अ ग ड अड (उठाका)

डयि- ड ग थ डैथ (उठाका)

पहुँटि- प हूँ ग ट (उठाका)

आरि अ आ ग ज ए अ ओ उ अ अः म अ सत लेव मात्रा सेहो अछि, द्वाक एमे ज ए ओ उ अ अः म केँ संशुद्ध कयमे गत कयमे प्रशुद्ध आ उचित कयल जागत अछि। जेना म केँ वी कयमे उचित करै। आ देखियो- ए लेव देखिओ क प्रयोग अछि। द्वाक देखिओ लेव देखियो अछि। कू सँ ह धवि अ समिलित लेवसँ कू सँ ह रैलैत अछि, द्वाक उठाका कयल हवतु शङ्क मेहक अक्षर उठाकाक प्ररति रैठल अछि, द्वाक हम जखन मलाजमे ज अक्षरमे रैजैत छी, तखना प्ररका लोककेँ रैजैत सगरहि- मलाज, रातुरमे ओ अ शङ्क जू = ज रैजै डयि।



हएव त्र अछि जू आ ए१ क संशुद्ध ह्रदा गगत उँचावण होगत अछि- गा । ओहिना छ अछि कू आ य क संशुद्ध ह्रदा उँचावण होगत अछि ड । हएव मे आ व क संशुद्ध अछि त्रै (जेना त्रैमिक) आ म् आ व क संशुद्ध अछि त्र (जेना त्रिम) । ए भेन त+व ।

उँचावणक ऑडियो फाँगल बिदेह आर्काइव <http://www.videha.co.in/> गव उँगल अछि । हएव कै / सँ / गव गुर अक्षरसँ सँ क२ लिखु ह्रदा ठँ / क२ लँ क२ । एये सँ ये गहिन सँ क२ लिखु आ रौदरौ लँ क२ । अकक रौद ठँ लिखु सँ क२ ह्रदा अग ठँ लिखु लँ क२ जेना

डलँ ह्रदा सत ठँ । हएव उ१ य सतय लिखु- ड१य सतय लँ । घवरौये रौदा ह्रदा घवरौये रावौ प्रशुद्ध क२ ।

वरुए-

वै ह्रदा सकेए (उँचावण सके-ए) ।

ह्रदा कथला कान वरुए आ वै ये अर्थ भिन्नता सेहो, जेना से कना जगहमे पाकिंग कवरौक अग्राम वै ओकरा । गूढनागव गता नागव जे दुनदुन नामा अ ड्रागव कनष्ट ह्रमक पाकिंगमे काज कवेत वरुए ।

डलँ, डलँ ये सेहो ए तवरुक भेन । डलँ क उँचावण डल-ए सेहो ।

संयोगल- (उँचावण संजोगल)

कै/ क२

केव- क (

केव क प्रयोग गद्यमे लँ क२, गद्यमे क२ सके डी ।)

क (जेना बागक)

बागक आ सँग (उँचावण बाग के / बाग क२ सेहो)

सँ- स२ (उँचावण)

चन्द्रबिन्दू आ अश्वभाव- अश्वभावमे क१ धरि प्रयोग होगत अछि ह्रदा चन्द्रबिन्दूमे लँ । चन्द्रबिन्दूमे कलक एकावक सेहो उँचावण होगत अछि- जेना बागसँ- (उँचावण बाग स२) बागकै- (उँचावण बाग क२/ बाग के सेहो) ।

कै जेना बागकै भेन हिन्दीक को (बाग को)- बाग को= बागकै

क जेना बागक भेन हिन्दीक का (बाग का) बाग का= बागक

क२ जेना जा क२ भेन हिन्दीक कव (जा कव) जा कव= जा क२

सँ भेन हिन्दीक से (बाग से) बाग से= बागसँ

स२, त२, त, केव (गद्यमे) ए१ टाक शेट्ट सँरुहक प्रयोग अछि ।



के दोसर अर्थे प्रयुक्त भऽ सकैए- जेना, के कहलक ? रिभक्ति “क” क रँदना एकव प्रयोग
अवर्धित ।

नमि, नहि, ले, नग, नँग, नग, नग एं सभक उँटावण आ लेखन - ले

उन्न क रँदनामे न्न जेना महगुर्ण (महगुर्ण ले) जतए अर्थ रँदनि जए ओतहि मात्र तीन अक्षरक
संज्ञाक्षरक प्रयोग उँटित । सम्पति- उँटावण स स ग त (सम्पति ले- काका सही उँटावण आसानीसँ
सम्पत्त ले) । रुद्रा सरोतम (सरोतम ले) ।

बाह्रिय (बाह्रिय ले)

सकैए/ सकै (अर्थ परिवर्तन)

पौडिअ/ पौडि जेन/ पौडिअ खव

पौडिअ/ पौडिअ/ (अर्थ परिवर्तन) पौडिअ/ पौडि

उ लोकनि (हठा कऽ, उ ये रिंकावी ले)

उअ/ उहि

उहिअ/

उहि खव/ उखि वऽ

जखैँ खैसखैँ

गँउअ/गँ

देखियेक/ (देखियेक ले- तहिना अ ये जखन आ दीर्घक मात्राक प्रयोग अवर्धित)

जकाँ / जेकाँ

तँग/ तैँ

हेत / हत

नमि/ नहि/ नँग/ नग/ ले

सौँस/ सौँस

रँउ /

रँउ (सोबउव)

गाए (गाँग नहि), रुद्रा गाँगक दूध (गाँगक दूध ले ।)

बहलैँ/ गहिलैँ

हमसि/ अखि





भ२

म२

द२

ठँ (त२, त लै)

सँ (स२ स लै)

गाढ तब

गाढ वग

साँस खल

जो (जो go, कले जो do)

ते/तथ जेना- ते दुखले/ तगमे/ तगले

जे/जथ जेना- जे कावना/ जगसँ/ जगले

ए/अथ जेना- ए कावना/ एसँ/ अगले/ रुदा एकव एकटी खास प्रयोग- नानति कतेक दिनसँ कहैत बहैत अग

ले/वथ जेना लेसँ/ नगले/ ले दुखले

नहँ/ लो

लालो ललो ललै ललहँ/ ललहँ/ ललै

जथ जाहि/ जे

जहिग/ जाहिग/ जगग/ जेग

एहि/ अहि

अग (बालक अतमे बाला / ए

अगड/ अडि/ अड

तथ तहि/ ते/ ताहि

उहि/ उग

सीथ/ सीथ

जीरि/ जीरी/ जीरै

बलेही/ बवहि



ते/ तँ/ तँ

जाय/ जायँ

नग/ ने

डग/ डे

नहि/ ने/ नग

गग/ गे

डगि/ डगि ...

समय मेरुदक संग जखन कोला रिभक्ति जूठै डै तखन समे जना समेगव गत्यादि । असगवमे हदय
आ रिभक्ति जूठल हदमे जना हदमे, हदमे गत्यादि ।

जग/ जाहि/

जे

जरिग/ जाहिग/ जगग/ जेरग

एहि/ अहि/ अग/ ए

अगड/ अडि/ अड

तग/ तहि/ ते/ तहि

उहि/ उग

सीथि/ सीथ

जीरि/ जीरी/

जीर

भले/ भलेही/

भवहि

ते/ तँ/ तँ

जाय/ जायँ

नग/ ने

डग/ डे

नहि/ ने/ नग



गग/

लो

डमि/ डमरि

टुकन अडि/ लोव गडि

२.२. मैथिलीमे भाषा सम्पादन गार्हक्य

नीटाँक सूट्टये देन बिकम्पमेसँ लेखज एडिटर द्वावा कोष कप टुकन जेरौक टाली:

लौलड कथन कप ग्रोह:

१. लोयरौना/ लोरौयरौना/ लोमयरौना/ लेरौरौना, लेमरौना/ लोयरौक/लेरौयरौना /लेमरौक

२. आ' /आ२

आ

३. क' लेल/क२ लेल/कय लेल/कय लेल/न' /न२/नय/नय

४. ड' लेल/ड२ लेल/डय लेल/डय

लेल

५. कव' लेल/कव२

लेल/कवय लेल/कवय लेल

६.

मिथ/दिथ मिथ, दिथ, मिथ, दिथ /

७. कव' रौना/कव२ रौना/ कवय रौना कलेरौना/कव' रौना /

कलेरौना

८. रौना रौना (थकय), रौनी (सूनी) ९

.

आइव आइ

१०. आइ: आइ

११. दु: थ दुथ १

२. टलि लेल टव लेल/टेल लेल

१३. देवथिह देवकिह, देवथि



१४.

देखवहि देखवनि/ देखवैह

१५. **डबिह/ डबहि डबिह/ डबैह/ डबनि**

१६. **छबैत/छैत छबति/छैति**

१७. **एथला**

अथला

१८.

रैठनि रैठनि रैठहि

१९. **उ' / उ२(सरगाग) उ**

२०

उ (संयोजक) उ' / उ२

२१. **हागि/हागि हागि/हागि**

२२.

जे जे / जे२ २३. ना-बुब ना-बुब

२४. **केवहि/केवनि/कवनि**

२५. **तखनत' तखन त'**

२६. **जा**

बलव/बलव बलव/बलव बलव

२७. **निकनय/निकनय**

वागव/ वागव रैलवाय/ रैलवाय वागव/ वागव निकन/ रैलवाय वागव

२८. **उतय/ जतय जत' / उत' / जतय/ उतय**

२९.

की बुबव जे कि बुबव जे

३०. **जे जे / जे२**

३१. **कुदि / यदि(मोन पावर) कुदि/यादि/कुदि/यादि**

यदि (मोन)

३२. **ओलो ओलो**



३३.

हंस/ हंस हंस

३४. लो आकि दस/लो किरा दस/ लो रा दस

३५. सप्त-सप्त सप्त-सप्त

३६. छह/ सात छ/छः/सात

३७.

की की / की (दीधीकावापुष २ रक्षित)

३८. जरावे जरावे

३९. कवयताह/ कवयताह कवयताह

४०. दलान दिमि दलान दिमि/दलान दिस

४१

. लोवाह गयवाह/गयवाह

४२. किछ आब किछ ओब/ किछ आब

४३. जाग छव जागत छव जाति छव/जेत छव

४४. गहुँटा छे जागत छव छे जाग छव गहुँटा/ तेष्ट जागत छव

४५.

जराव (यरा)/ जराव(योजी)

४६. वय/ वय क / कर/ वय कय / वर कर/ वर कय

४७. व /वर कय/

कय

४८. एथन / एथन / अथन / अथन

४९.

अलीक अलीक

५०. गलीव गलीव

५१.

धाव गाव कनाथ धाव गाव कनाथ/कनाथ

५२. जेकाँ जेकाँ/



झर्का

३३. तहिन तहिन

३४. एकर अकर

३५. रैहिन रैहिन

३६. रैहिन रैहिन

३७. रैहिन-रैहिन

रैहिन-रैहिन

३८. नहि/ ले

३९. कबरी/ कबरिया/ कबरिया

४०. त/ त २ तय/तय

४१. तैयारी ये छे-तैया/तैया, छे-तैया/तैया

४२. गितीये दू भाग/भाग/भाग

४३. गी गीती दू भाग/भाग/ भाग/ भाग। गीत छरित

४४. गी ये / गी दू भाग भाग/भाग

४५. देहि/ दहि/ दहि/ दहि/ दहि/ दहि/ दहि

४६. द / द २/ द

४७. उ (संयोजक) उ २ (संयोजक)

४८. तका कय तकाय तका

४९. गेले (on foot) गेले कय/ कय

५०.

तहिन तहिन

५१.

गुनीक

५२.

५३. रैहिन कय कय / कय

५४. रैहिन/रैहिन

५५. रैहिन



१३.

तिका तिका

१३.

तछि

११. गवरौउवलि/ गवरौवनि/

गवरौवलि/ गवरौवनि

१४. रौव रौव

१५.

तेह तेह(अक्षर)

+०. जे जे'

+१

. से/ ले से/ले'

+२. अक्षरका अक्षरका

+३. उगिलाव उगिलाव

+४. अक्षर

/ अक्षरका अक्षर

+३. सगलक सगलक +३.

छवि

+१. कवगयो/उ कवगयो ल देवक /कवगयो-कवगयो

+४. अक्षर

अक्षर

+५. सगल १-सगल

सगल १-सगल

५०. अक्षर-अक्षर गेल-गेल

५१. अक्षर

५२. अक्षर



९३. वगा

९४. लेख- ले - लेख

९५. ब्रूमव ब्रूमव

९६.

ब्रूमव (संशोधन अर्थमे)

९७. लेख यथ / लेख / लेख / यथ

९८. तातिव

९९. अयनाय- अयनाय/ अयनाय/ अयनाय

१००. निम्न- निम्न

१०१.

निम्न निम्न

१०२. ज्ञा ज्ञा

१०३.

ज्ञा (in different sense)-last word of sentence

१०४. छत नव अर्थ ज्ञा

१०५.

ल

१०६. लेख (pl ay) -लेख

१०७. निम्न- निम्न

१०८.

ठग- ठग

१०९

गठ- गठ

११०. कनिष्ठा/ कनिष्ठा कनिष्ठा

१११. वाक्य- वाक्य

११२. लेख/ लेख लेख

११३. अर्थवत्त-



उक्त

११४. बुँसवहि (different meaning - got understand)

११५. बुँसवहि/बुँसवनि/ बुँसवहि (understood himself)

११६. छल- छव/ छवि लाव

११७. थ्याँ- थ्याँ

११८.

मोन गौड़वहि/ मोन गौड़वनि/ मोन गौड़वहि

११९. कैक- कक- कक

१२०.

वग वग

१२१. जलगाँव

१२२. जलगाँव जवगाँव- जलगाँव/

जलगाँव

१२३. लोकाँव

१२४.

गवरोवहि/ गवरोवनि गवरोवहि/ गवरोवनि

१२५.

टिचैत- (to test) टिचैत

१२६. कवग्यो (willing to do) कवग्यो

१२७. जेकवा- जेकवा

१२८. तकवा- तकवा

१२९.

बिदेसव आलमे/ बिदेसव आलमे

१३०. कवरौगहूँ/ कवरौगहूँ/ कवरौगहूँ कवरौगहूँ

१३१.

हाकि (डिजाइन लाइव)

१३२. उज्ज रज्ज आलमे/ आलमे कागज/ कागज/ कागज



१३३. श्रीव भाग/ श्रीव-भाग

१३४. निज / निजाग/ निजा

१३५. नृप/ ल

१३६. रैज नृप

(ल) निज जाय

१३७. तख ल (नृप) कहेत थि। कहे/ नृप देखे छव नृप कहेत-कहेत/ नृप-नृप देखेत-देखेत

१३८.

कहेत लोटे/ कहेत लोटे

१३९. कयाज-कयाज/ कयाज- कयाज

१४०

. वग वग

१४१. खेवाज (for playing)

१४२.

तखि तखि

१४३.

लोवत लोव

१४४. का किये / कउ

१४५.

कमे (hair)

१४६.

कस (court -case)

१४७

. रैज/ रैज/ रैज

१४८. खेवाज

१४९. कमी कमी

१५०. छव छव



१३.१. कर्म कवय

१३.२. डूराँसै/ डूराँसै/ डूयाँसै डूयाँसै/ डूयाँसै

१३.३. एथुनका/

अथुनका

१३.४. कथ/ मिथ (राकक अंतिम गेहँ)- व२

१३.५. कथनक/

कथक

१३.६. गवरी गर्ग

१३.७

रवदी रदी

१३.८. सुना लवाल सुना/सुना२

१३.९. एनाथ-लनाथ

१३.१०.

लेश ल येवदलि लेश ल येवदलि

१३.११. नदी / ले

१३.१२.

लेश लेश

१३.१३. कतहु/ कतौ कली

१३.१४. उमविगव-उमवगव उमवगव

१३.१५. लविगव

१३.१६. लोल/लोलल लोलल

१३.१७. गग/गग

१३.१८.

ल ल

१३.१९. दवरैल/ दवरैल

१३.२०. गी

१३.२१.



धवि डरु

९१२.

धुवि खोष्ट

९१३. खोबखेरु

९१४. खेड

९१५. खो/ डू

९१६. खोहि (गद्यमे ग्रोह)

९१७. खोले / खोहि

९१८.

कबरौआ कबरौआये

९१९. एकठो

९२०. कविता / कवता

९२१.

गहुँछि/ गहुँछ

९२२. बाखनहि बखनहि/ बखन

९२३.

वगवहि/ वगवनि वागवहि

९२४.

बुनि (डुछावा बुनि)

९२५. बुनि (डुछावा बुनि)

९२६. एवनि लवनि

९२७. बिउल/ बिउल

बिउल

९२८. कबरौआहि/ कबरौआ

कबरौआहि/ कबरौआ

९२९. कबरौआहि/ कबरौआ

९३०.



आकि/ कि

१९९. गूँछि/

गूँछ

१९२. रैती जवाय/ जवाय जवा (आणि नगा)

१९३.

से से

१९४.

हाँ से हाँ (सँसे हाँ बिचस्तिसे ली क)

१९५. खय खेन

१९६. खजव(spacious) खेन

१९७. होयतहि/ होयतहि/ होयतनि/होयनि/ होयहि

१९८. हाथ मटियाएँ/ हाथ मटियाँ/हाथ मटियाएँ

१९९. खका खका

२००. देखी देखी

२०१. देखी देखी

२०२. सतुवि सतुव

२०३.

साहेरें साहेरें

२०४. गोलैह/ लावहि/ लावनि

२०५. लेखीक/ लेखीक

२०६. केला/ कएनहुँ/केलो केवँ

२०७. किछ न किछ/

किछ ल किछ

२०८. घुमेनहुँ/ घुमाउ नहुँ/ घुमेनो

२०९. एवाक/ अएनाक

२१०. अः/ अह

२११. नय/



वष (अर्थ-परिवर्तन) २५२ कबीर/ कलक

२५३. प्रबलक/ मलक

२५४. गिला/ गिवा

२५५. कर/ क

२५६. जा/ ज

जा

२५७. श्री/ श्री

२५८. भ/ भ (शॉक कभी आतक)

२५९. निय/ निय

२६०

.लेन/लेन

२६१. गलि/ गलि डा रीदक/ रीदक ड

२६२. तहि/ तहि/ तहि/ त

२६३. कहि/ कलि

२६४. त/ त

त/ त

२६५. न/ न/ न/ न/ न

२६६. हे/ हे / एव/ एव

२६७. त/ त/ त/ त/ त

२६८. दृष्टि/ दृष्टि

२६९. श्री (come)/ श्री (conjunct ion)

२७०.

श्री (conjunct ion)/ श्री (come)

२७१. कला/ कला/ कला/ कला

२७२. गेलि-गेलि-गेलि

२७३. लेलीक- लेलीक

२७४. केली- केली- केली/ केली



२३३. किड न किड- किड ल किड

२३७. कहैल- कहल

२३१. आँ (come)-आँ (conjunction-and)/आँ । आँ-आँ /आँह-आँह

२३४. हएत-हेत

२३५. घुमैल-घुमैल- घुमैल "

२४०. एलक- एलक

२४५. लोहि- लोहि/ लोहि

२४२. उ-बाग उ बाग उ बाग (conjunction), उ कहल (he said)/उ

२४३. की ह/ कोही एही ह/ की हे । की ह

२४४. दृष्टि/ दृष्टि

२४३.

. गोमि/ गोमि

२४७. तै / तै/ तै/ तै

२४१. जौ

/ जौ जौ

२४४. सभ/ सभ

२४५. सभ/ सभ

२४०. कहि/ कहि

२४५. कल/ कल/ कल/

२४२. सबकजि भय लव/ भय लव/ भय लव

२४३. कल/ कल/ कल/

२४४. ए/ ए

२४३. जल/ जल

२४३. लव/ लव

लव (अर्थ परिवर्तन)

२४१. कल/ कल/ कल/

२४४. लव/ लव/ लव (अर्थ परिवर्तन)



२३९. कर्षक/ कलक/कनी-यनी

२४०. गळवहि गळवनि/ गळवण/ गणठवहि/ गळवनि/

२४१. निशय/ नियम

२४२. लेखक/ लेखक

२४३. गहि अरु कल ठा रीचमे कल ठ

२४४. आकाशवाणीमे रिक्तारीक प्रयोग उचित ले/ अप्रौद्योगिक प्रयोग शान्ति तर्कीकी नृणताक परिचायक
उक्त रचना अरुण (रिक्तारी) क प्रयोग उचित

२४५. कव (गद्यमे आद्य) / -क/ क२/ क

२४६. छेहि- छेहि

२४७. वल्लो/ वल्लो

२४८. होत/ होत

२४९. जात/ जात

२५०. आत/ आत/ आत

२५१

. आत/ आत/ आत

२५२. निशयरीक/ निशयरीक/ निशयरीक

२५३. गुरु/ गुरु

२५४. गुरु/ गुरु

२५५. आत/ आत/ आत/ आत

२५६. जाहि/ जाहि/ जाहि/ जाहि

२५७. जात/ जात/ जात/ जात

२५८. आत/ आत

२५९. कक/ कक

२६०. आत/ आत/ आत

२६१. जात/ जात/ जात (नामति जात नगरीह ।)

२६२. गुरु/ गुरु

२६३. कुरु/ कुरु



२५८. ताहि/ ते/ तथ

२५९. गायरौ/ गावरौ/ गवरौ

२६०. सकै/ सकय/ सकय

२६१. सेवा/सवा/ सवा (भात सवा गेल)

२६२. कहेत बखी/देखेत बखी/ कहेत छलौ/ कहे छलौ- अलिना छलैत/ गटेत

(गटे-गटेत अर्थ कथला काय परिवर्तित) - आव बूसे/ बूसेत (बूसे/ बूसे छी दूदा बूसेत-बूसेत)/ सकैत/ सकै। कखैत/ कखै। दे/ देत। छेक/ छे। बखै/ बखैक। बखै/ बखैक। बिब/ बिब। बातिक/ बातिक बूसे आ बूसेत कब अग-अग अगल-अगल अयोग समीप अछि। बूसेत-बूसेत आब बूसेत। छय बूसे छी।

२६३. दुखी/ दुख

२६४. ते/ ते/ ते

२६५.

थन/ थन/ थना (जेव थन/ जेव थन)

२६६. तक/ धवि

२६७. ग२/ हो (meaning different - अगल ग२)

२६८. म२/ म (दूदा द२, न२)

२६९. उ२/ (तीन अक्षरक मेन रूदना प्रकृति एक आ एकठा दोसबक उ२योग) आदिक रूदना ह आदि। म२/ म२/ क२/ क२ आदिये उ संशुद्ध कोला आरुक्ता येथिनीमे ले अछि। र२

२७०. रौनी/ रौनी

२७१. रौनी/ रौनी रौनी (बहेरौनी)

२७२.

. रावी/ (रौदरौनी)

२७३. राती/ राती

२७४. अ२/ अ२

२७५. म२/ म२

२७६. म२/ म२

२७७. म२/ म२

२७८. म२/ म२

२७९. म२/ म२



३०४. हरी/ हर

३०५. बाधक/ बधक

३०६. आ (come)/ आ (and)

३०७. पश्चात्ताप/ पश्चात्ताप

३०८. २ केव रारहाव शैक्षिक अनुक्रमे मात्र, यथासंभव रीटमे ले ।

३०९. कहेत/ कहे

३१०.

बह (डव)/ बहे (डवे) (meaning different)

३११. तागति/ ताकति

३१२. खाना/ खानै

३१३. रौगि/ रौगि/ रौगि

३१४. जार्ति/ जार्ति

३१५. कागज/ कागज/ कागज

३१६. गिरे (meaning different - swallow)/ गिर (थस)

३१७. बहिय/ बाहिय

DATE-LIST (year - 2012-13)

(१४२० फसली साल)

Marriage Days:

Nov.2012- 25, 26, 28, 29, 30

Dec.2012- 5,9, 10, 13, 14

January 2013- 16, 17, 18, 23, 24, 31

Feb.2013- 1, 3, 4, 6, 8, 10, 14, 15, 18, 20, 24, 25

April 2013- 21, 22, 24, 26, 29

May 2013- 1,2,3,5,6,9,12,13,17,19,20,22,23,24,26,27,29,30,31



June 2013– 2,3

July 2013– 11, 14, 15

Upanayana Days:

January 2013– 16

February 2013– 14, 15, 20, 21

April 2013– 22

May 2013– 20, 21

Dviragaman Din:

November 2012– 25, 26, 28, 29

December 2012– 2, 3, 14

February 2013– 14, 15, 18, 20, 21, 22, 27, 28

March 2013– 1

April 2013– 18, 22, 24, 26, 28, 29

May 2013– 12, 13

Mundan Din:

November 2012– 26, 30

December 2012– 3

January 2013– 18, 24

February 2013– 1, 14, 15, 20, 28

April 2013– 17

May 2013– 13, 23, 29

June 2013– 13, 19, 26, 27, 28

July 2013– 10, 15



FESTIVALS OF MTHI LA (2012-13)

Mauna Panchami -08 July

Madhushr avani - 22 July

Nag Panchami - 24 July

Raksha Bandhan- 02 Aug

Kr i shnast ami - 10 August

Kushi Amavasya / Somvar i Vr at - 17 August

Vi shwak arma Pooj a- 17 Sept ember

Har t al i ka Teej - 18 Sept ember

Chaut hChandr a-19 Sept ember

Kar ma Dhar ma Ekadashi -26 Sept ember

I ndr a Pooj a Aar ambh- 27 Sept ember

Anant Catur dashi - 29 Sep

Agast yar ghadaan- 30 Sep

Pi t ri Paksha begi ns - 30 Sep

Ji moot avahan Vr at a/ Ji ti a-08 Oct ober

Mat ri Navami - 09 Oct ober

Somvat i Amavasya Vr at - 15 Oct ober

Kal ashst hapan- 16 Oct ober

Bel naut i - 20 Oct ober

Pat ri ka Pr avesh- 21 Oct ober

Mahast ami - 22 Oct ober



Maha Navami - 23 October

Vijaya Dashami - 24 October

Kojagar - 29 Oct

Dhanteras - 11 November

Diyabati, shyama pooja - 13 November

Annakoota/ Govardhana Pooja - 14 November

Bhratri dwitiya/ Chitrakuta Pooja - 15 November

Chhatra - 19 November

Devottan Ekadashi - 24 November

ravi vratar ambh - 25 November

Navanna parvan - 25 November

Kartik Poorni - Sama Visarjan - 28 November

Vivaha Panchmi - 17 December

Makar / Teela Sankranti - 14 Jan

Naraknavaranchaturdashi - 08 February

Basant Panchami / Saraswati Pooja - 15 February

Achha Saptmi - 17 February

Mahashivaratri - 10 March

Holikadahan - Fagua - 26 March

Holi - 28 March

Varuni Trayodashi - 07 April

Chaiti navaratar ambh - 11 April

Jurishital - 15 April



Chaiti Chhat hi vrata-16 April

Ram Navami - 19 April

Ravi Brata - 12 May

Akshaya Tritiya-13 May

Janaki Navami - 19 May

Vat Savitri -barasait - 08 June

Ganga Dashhar a-18 June

Somavati Amavasya Vrata - 08 July

Jagannath Rath Yatra - 10 July

Hari Sayan Ekadashi - 19 July

Aashadhi Gurupurnima-22 Jul

VI DEHA ARCHIVE

पत्रिकाक सबै पुरान आ ब्रैल-रिदेह आ तिरहुता आ देवनागरी कसमे Videha e journal's
all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

रिदेह आ आँक ३० पत्रिकाक पहिल -

रिदेह आ आँक आँक आँक ३० पत्रिकाक -

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-i/>

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-ii/>

२. मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi>

३. डिजिटल आँक मैथिली. Maithili Audio Downloads

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-audio>

४. मैथिली वीडियोक संकलन Maithili Videos



<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-video>

३. आधुनिक चित्रकला आ चित्र / मिथिला चित्रकला. Maithila Painting/ Modern Art and Photos

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>

बिदेहक एहि सब सहयोगी विकसित सेहो एक लेब जाई ।

३. बिदेह मैथिली क्विज :

<http://videhaquiz.blogspot.com/>

१. बिदेह मैथिली ज्ञानरत्न एग्रीगेटर :

<http://videha-aggregator.blogspot.com/>

४. बिदेह मैथिली साहित्य अग्रजोमे अमूर्त

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

६. बिदेहक पूर्ब-रूप "भासविक गाढ" :

<http://gajendratihakur.blogspot.com/>

१०. बिदेह गैडेट्स :

<http://videha123.blogspot.com/>

११. बिदेह फागन :

<http://videha123.wordpress.com/>

१२. बिदेह: सदेह : पहिल तिवहुता (मिथिला-सकल) ज्ञानरत्न (ब्लॉग)

<http://videha-sadehablogspot.com/>

१३. बिदेह:ब्लैक: मैथिली ब्लैकमे: पहिल लेब बिदेह द्वारा

<http://videha-braille.blogspot.com/>

१४. VI DEHA 1ST MAITHILI FORTNIGHTLY E JOURNAL ARCHIVE

<http://videha-archive.blogspot.com/>

१५. बिदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक आ पत्रिका मैथिली पोथीक आर्काइव

<http://videha-pothi.blogspot.com/>



१७. बिदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ३ पत्रिका ऑडियो आर्काइव

<http://videha-audio.blogspot.com/>

१९. बिदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ३ पत्रिका वीडियो आर्काइव

<http://videha-video.blogspot.com/>

१८. बिदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ३ पत्रिका मिथिला चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला

<http://videha-paintings-photos.blogspot.com/>

१९. मैथिल आर मिथिला (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय ज्ञानवृत्त)

<http://maithilaurmaithila.blogspot.com/>

२०.श्रुति प्रकाशन.

<http://www.shruti-publication.com/>

२१.<http://groups.google.com/group/videha>

२२.<http://groups.yahoo.com/group/VIDEHA/>

२३.गजेन्द्र ठाकुर गडेन्द्र

<http://gajendratyakur123.blogspot.com>

२४. लषा कुरका

<http://mangan-khabas.blogspot.com/>

२५.बिदेह रेडियोकारिता आदिक पहिल पोडकास्ट साइट-मैथिली कथा:

<http://videha123radio.wordpress.com/>

२६.  Videha Radio

२७.  Join official Videha facebook group.

२८. बिदेह मैथिली नाट्य ड्रामा

<http://maithili-drama.blogspot.com/>



२९. समादिया

<http://esamaad.blogspot.com/>

३०. मैथिली फिल्म

<http://maithilifilms.blogspot.com/>

३१. अक्षरिहाव आश्रव

<http://anchinharakharakolkata.blogspot.com/>

३२. मैथिली हाकु

<http://maithili-hai.blogspot.com/>

३३. मानक मैथिली

<http://manak-maithili.blogspot.com/>

३४. विहानि कथा

<http://vihani-katha.blogspot.in/>

३५. मैथिली कविता

<http://maithili-kavita.blogspot.in/>

३६. मैथिली कथा

<http://maithili-katha.blogspot.in/>

३७. मैथिली समालोचना

<http://maithili-samalochna.blogspot.in/>

महत्वपूर्ण सूचना: The Maithili pdf books are AVAILABLE FOR free PDF DOWNLOAD AT

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

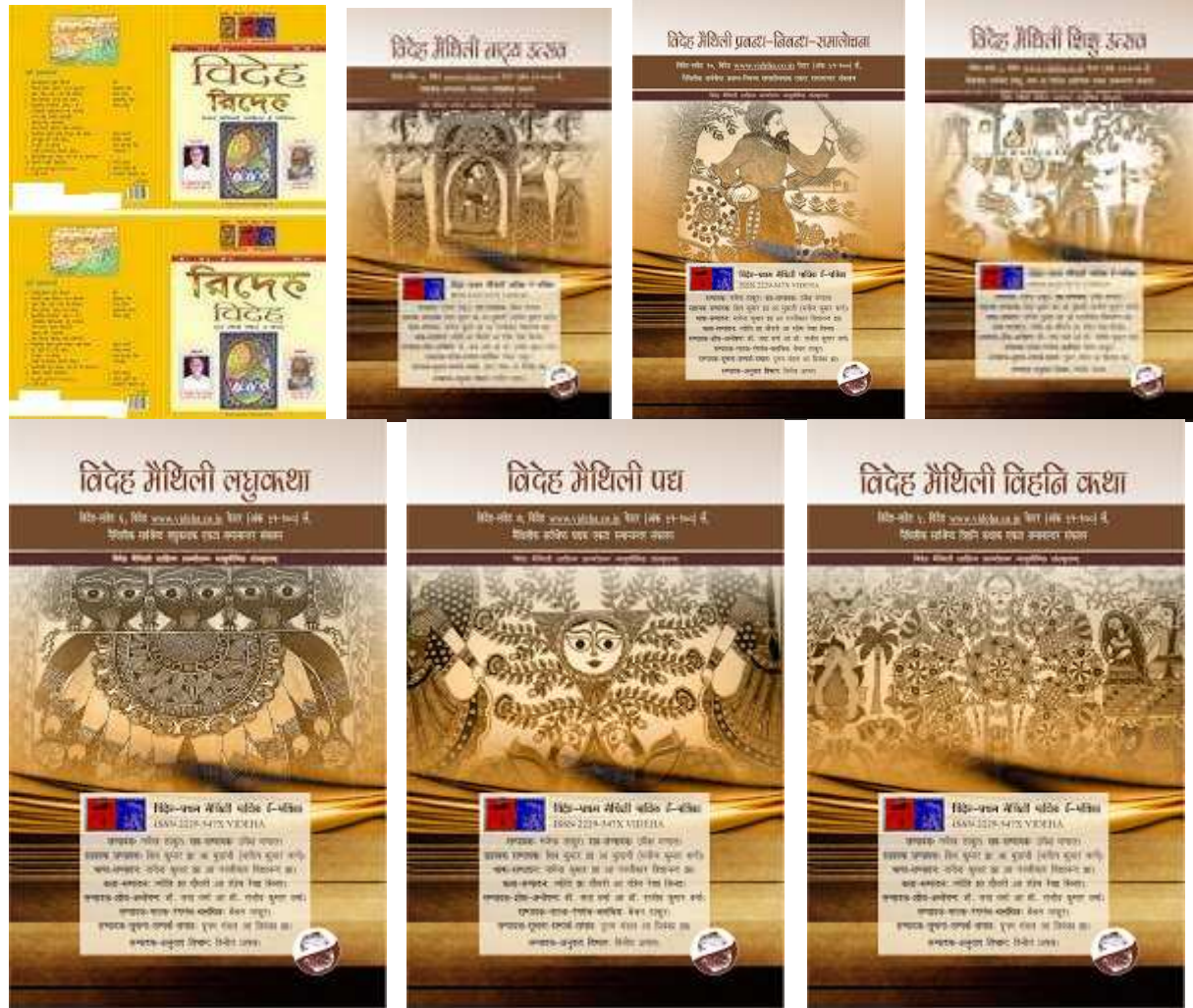
<http://videha123.wordpress.com/>

<http://videha123.wordpress.com/about/>



मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका 'बिदेह' १२४ म अंक १५ फरबरी २०१३ (वर्ष ६ मास ६२ अंक १२४)

मानक संख्या ISSN 2229-547X VIDEHA



बिदेह:सदर:१: २: ३: ४:३:७:१:२०१० "बिदेह"क छिटि संस्करण: बिदेह-३-पत्रिका
(<http://www.videha.co.in/>) क छान बच्चा समिति।

सम्पादक गजेन्द्र ठाकुर।

Details for purchase available at publisher's (print-version) site
<http://www.shruti-publication.com> or you may write to
shruti_publication@shruti-publication.com

बिदेह



मैथिली माहिर आन्दोलन

(८) २००४-१३. सराधिकार लेखकाधीन आ जतए लेखकक नाम नहि अछि ततए संगीदकाधीन । बिदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका । SSN 2229-547X VI DEHA **संपादक: गजेन्द्र ठाकुर । सह-संपादक: उमेश मंडल । सहायक संपादक: मिर कयाव सा आ कल्याणी (मलाज कयाव कर्मा) । जय-संपादक: नालेन्द्र कयाव सा आ गजरीक विलास सा । कव-संपादक: ज्योति सा टोषवी आ वणि लखी मिश्र । संपादक-लोच-अग्रवा: स. जया रमा आ स. बजौर कयाव रमा । संपादक- नाटक-वर्ग-चवटि-लैस ठाकुर । संपादक- सूत्रा-सर्क-समाद- पुन्य मंडल आ धिया सा । संपादक- अग्रवाद विभाग- विनीत उमेश ।**

बचनाकाव अपन मौलिक आ अलंकारित बचना (जकर मौलिकताक सर्ग उतवदालिह लेखक गीक मध्य डहि) ggajendra@videha.com के मेन अटैचमेन्ट कगये doc, .docx, .rtf आ .txt फॉर्मेटमे पठा सकैत छि । बचनाक संग बचनाकाव अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन ईन कएन गेल लोके पठेताह, से आशि करैत छि । बचनाक अंतमे ठागग बहल, जे आ बचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशक हेतु बिदेह (पाक्षिक) आ पत्रिकाले देन जा बहन अछि । मेन प्राप्ति होयराक बाद यथार्थत शीघ्र (सात दिनक भीतर) एक प्रकाशक अंकक सूचना देन जायत । 'बिदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक आ पत्रिका अछि आ एमे मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमे मिथिला आ मैथिलीसँ सम्बन्धित बचना प्रकाशित कएन जायत अछि । एहि आ पत्रिकाले त्रैमसिक नक्का ठाकुर द्वारा मासक ०५ आ १३ तिथिके आ प्रकाशित कएन जायत अछि ।

(८) 2004-13 सराधिकार स्वकृत । बिदेहमे प्रकाशित सत्ता बचना आ आर्काइवक सराधिकार बचनाकाव आ संग्रहकर्ताक नगमे डहि । बचनाक अग्रवाद आ पुनः प्रकाश किआ आर्काइवक उपयोगक अधिकार किनराक हेतु ggajendra@videha.com पर संपर्क कक । एहि मागके त्रैमसिक नक्का ठाकुर, मधुलिका टोषवी आ वणि प्रिया द्वारा डिजाइन कएन गेल ।



मिहिवरु

